AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER SEPTEMBER 2021

Abp. Raphy Manjaly conferred with Sacred Pallium by Most Rev. Leopoldo Girelli, Papal Nuncio on Sunday Sept. 12, 2021

Sweet Memories of Pallium Ceremony

(Courtesy: Dev Darshan, Agra)

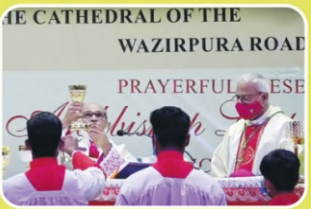

Fr. Moon at Dargah, Inter Faith Meeting

Natasha Sagar turns 4, St. Mary's, Agra

Kunal Phule on his 1st B'day, St. Patrick's

Editorial

प्रिय बन्धुओं, **अग्रेडियन्स** का सितम्बर महीने का अंक आपके हाथों में है। हर बार की भाँति हमेशा हमारा यह प्रयास रहता है, कि पत्रिका के माध्यम से अपने पाठकों के लिए संतुलित पठनीय सामग्री परोस सकें। आशा है, कि आपको यह अंक भी पसन्द आएगा।

वैसे तो अगस्त और सितम्बर महीने बहुत से दृष्टिकोणों से हमारे लिए खास हैं- जहाँ अगस्त महीने में हम धन्य कुँवारी मरियम का स्वर्गोद्ग्रहण का महापर्व मनाते हैं, उसी दिन अपनी मातृभूमि की आजादी की वर्षगाँठ भी मनाते हैं। माँ मरियम के स्वर्ग जाने के ठीक एक हफ्ते बाद 22 तारीख को कलीसिया, माता मरियम, स्वर्ग और पृथ्वी की महारानी का महापर्व मनाती है। इसी प्रकार सितम्बर महीने में शिक्षक दिवस और संत (मदर) तेरेसा के निर्वाण दिवस की यादगारी मनाते हैं। 8 तारीख को हम अपनी प्यारी माँ को हैप्पी बर्थडे कहते हैं। 29 तारीख को महादूतों का पर्व मनाते हैं।

इस सब वार्षिक पर्वों-महापर्वों के अतिरिक्त इस वर्ष आगरा महाधर्मप्रांत के लिए ''आइसिंग ऑन केक'' के समान संत पिता फ्रांसिस द्वारा हमारे प्रिय महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि को पवित्र पैलियम (अम्बरिका पट्ट) प्रदान किए जाने का भव्य समारोह सम्पन्न हुआ। एक अति भव्य समारोह के दौरान भारत में संत पिता फ्रांसिस के नवनियुक्त प्रतिनिधि आर्चबिशप जैरिली ने आर्चबिशप राफी को पैलियम पहनाकर संत पिता का आशीर्वाद, अधिकार और आगरा धर्मक्षेत्र के रेवड़ की देखभाल की जिम्मेदारी सौंप दी।

सामान्यत: संत पिता स्वयं संत पीटर और संत पौलुस के महापर्व (29 जून) पर विश्व भर के सभी मेट्रोपोलिटन आर्चबिशप को सेंट पीटर्स बसीलिका (महागिरजाघर) में पैलियम (अम्बरिका पट्ट) प्रदान करते हैं, किन्तु फिलहाल कोरोना महामारी के कारण यह संभव नहीं था।

रविवार 12 सितम्बर को आगरा में आयोजित पैलियम समारोह में आगरा धर्मक्षेत्र के दस महाधर्माचार्यों सहित हमारे अपने प्यारे श्रद्धेय जोसफ थाईकाट्टिल (धर्माध्यक्ष, ग्वालियर) ने भी भाग लिया।

कोरोना संक्रमण के चलते बहुत सीमित संख्या में विश्वासियों ने भाग लिया। महाधर्मप्रांत से भी मात्र 35 पुरोहितों ने समारोह में शिरकत की। संभवत् दिन और समय मैच नहीं किया।

संत पिता फ्रांसिस के राजदूत महाधर्माध्यक्ष लिओपोल्दो जेरिली ने अपने सम्बोधन में आगरा शहर, यहाँ की संस्कृति और विशेषकर विश्व के सर्वाधिक टूरिस्टों को आकृषित करने वाली अद्वितीय, बेमिसाल और बेजोड़ इमारत 'ताजमहल' का विशेष रूप से उल्लेख किया। इसके साथ ही सेंट जोसफ किचिन, सद्भावना और सेंट अल्फोंसा विशिष्ट विद्यालय की भी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आर्चबिशप जेरिली ने सभी पुरोहितों को अलग से सम्बोधित करते हुए दो मुख्य दृष्टिकोणों; (1) पास्टोरल (पुरोहितिक) एवं (2) सामाजिक दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके लिए उन्होंने एक तीन सूत्री मंत्र भी दिया। **पहला**- शिक्षा (अर्थात अपने शिक्षण संस्थानों) के माध्यम से समाज में नैतिक व सुसमाचारी मूल्यों को रोंपे तथा मूल्यपरक शिक्षा को प्राथमिकता दें। **दूसरा**- कैटेकिज़्म। (अपनी भेड़ों-रेवड़ को धर्मशिक्षा व विश्वास में परिपक्वता प्रदान करें। उन्हें धार्मिक, सांस्कारिक एवं बुलाहट सम्बन्धी ज्ञान दें। स्थानीय कलीसिया की भलीभांति देखभाल करें, क्योंकि दक्षिण भारत की तुलना में उत्तर भारत की कलीसिया (चर्च) अभी भी अपने शैशवकाल में ही है। इसे बहुत देखभाल, नन्हें वृक्ष की डालियों के समान काटने-छाँटने और खाद-पानी देने की बहुत आवश्यकता है। **तीसरा**-आप कलीसिया के लिए प्रार्थना करें और स्वयं प्रार्थनामय सात्विक जीवन जीकर अपने लोगों के सामने उत्तम व आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करें। अपनी भेड़ों की गन्ध पहचानिए। उसी से आप पहचाने जाने चाहिए। गड़ेरिए की अपने रेवड़ के अभाव में कोई पहचान या उपयोगिता नहीं।

साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि, हमें हर क्षेत्र में अपने अन्य धर्मावलम्बी मित्रों-सहकर्मियों व सहयोगियों के साथ मिलकर सर्वधर्म समभाव व संवाद के लिए निरन्तर प्रयास करने चाहिए। इससे हमें आपस में एक दूसरे को समझने व अपनी बात समझाने में सहायता मिलेगी।

प्रभु में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस

(कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

SHEPHERD'S VOICE

The existence of angels is a truth of faith. Both Sacred Scriptures and the Tradition of the Church support it. In the liturgical calendar two days have been set apart for knowing, honouring and loving angels, namely September 29 and October 2.

St. Augustine says that angel is the name of their office, not of their nature. Angels are pure spiritual creatures of God who have understanding and will. They have no bodies like us and so they cannot die. As spiritual beings, they are invisible. They live constantly in the presence of God and convey God's will and God's protection to men. They are also powerful intercessors.

Here, using Psalms 34 and 91, we shall reflect on angels as our protectors. In Psalms 34 and 91 the psalmist recounts his experience of God's protection and invites the reader to feel the security of God's care. Those who trust in God are protected from harm (91:9). "Happy are those who take refuge in him (34:8).

What are the dangers from which those who take refuge in the Lord are protected? They are: hunger, troubles, pestilence, scourge, stumbling, wild animals, and so on. These are the dangers and anxieties experienced by ancient Israel.

No matter what the danger is, God protects us from every evil through the ministry of his angels. God guards us collectively as his people, his church: "The angel of the Lord encamps around those who fear him, and delivers them (34:7). God also watches over us individually: "For he will command his angels concerning you, to guard you in all your ways" (91:11). God provides his care for us through them. Even as God sent his angel to guard his people on their journey through the desert (Exod 23:20; 32:34; 33:2), he orders his angels to protect us along the journey of life. The dangers along our journey may be physical or spiritual. But the comforting message is God will protect us through the ministry of his angels.

Let us thank God our Father for the protection he grants us through his angels. Just as the angels, let us turn completely toward our Creator.

We will do well to join the never- ending song of praise of the angels and cultivate their spirit of loyalty to God and goodness to people.

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

स्वर्गदूतों या फरिश्तों का अस्तित्व हमारे विश्वास की सच्चाई (हकीकत) है। पवित्र धर्मशास्त्र और हमारी ख्रीस्तीय परंपरा दोनों इसका समर्थन करते हैं। हमारी पूजन पद्धति के पंचांग में दो दिन अर्थात् 29 सितम्बर और 2 अक्टूबर स्वर्गदूतों को जानने, उनका सम्मान करने और उनसे प्रेम करने के लिए कलीसिया ने अलग से सुनिश्चित किए हैं।

संत अगस्टिन बताते हैं, कि स्वर्गदूत उनके काम से जाने जाते हैं, न कि उनके नाम से। स्वर्गदूत पूर्ण रूप से ईश्वर की आध्यात्मिक रचनाएं हैं, जिनमें समझदारी और इच्छा शक्ति निहित है। उनके हमारे जैसे शरीर (काया) नहीं होती, इसीलिए वे मर नहीं सकते। आध्यात्मिक रचना होने के कारण वे अदृश्य रहते हैं। हमें नजर नहीं आते हैं। वे निरन्तर ईश्वर की उपस्थिति में रहते हैं इसलिए वे ईश्वर की इच्छा और उसकी सुरक्षा हम मनुष्यों को देते हैं। वे बहुत शक्तिशाली मध्यस्थ भी होते हैं, जो ईश्वर के सामने हमारे लिए निरन्तर प्रार्थना, स्तुति-विनती करते हैं।

भजन (स्त्रोत) संख्या 34 और 91 को ध्यान में रखते हुए हम स्वर्गदूतों पर मनन-चिन्तन करेंगे, कि वे किस प्रकार हमारे संरक्षक हैं। इन दोनों भजनों (34 और 91) में भजनकार हमारे साथ अपना अनुभव बांटता है कि ईश्वर ने किस प्रकार उसकी रक्षा की। साथ ही अपने पाठकों को भी ईश्वर की चिन्ता और उसकी सुरक्षा को अनुभव करने के लिए आमंत्रित करता है, जो ईश्वर में विश्वास करते हैं; 'उनका कोई अनिष्ट नहीं होगा, क्योंकि उन्होंने सर्वोच्च ईश्वर को अपना शरण स्थान बनाया है।' (91:9)

वे कौन से खतरे हैं, जिनसे प्रभु अपनी शरण लेने वालों की रक्षा करता है? ये हैं; भूख, दुख-चिन्ता, महामारी, अनिष्ट, कठिनाई, जंगली पशुओं आदि। प्राचीन (काल) में इस्राएली लोग ये खतरे और चिन्ताएं निरन्तर अनुभव करते हैं।

खतरा चाहे जैसा भी हो, ईश्वर अपने स्वर्गदूतों की सेवा (मदद) से अपने लोगों की हर तरह की बुराई से रक्षा करता है। ईश्वर अपने लोगों, अपनी कलीसिया की सामूहिक रूप से रक्षा करता है: ''प्रभु का दूत उसके भक्तों के पास डेरा डालता और विपत्ति से उनकी रक्षा करता है'' (34:8)। ईश्वर हम में से हरेक की व्यक्तिगत रूप से भी देखभाल और रक्षा करता है; ''वह अपने दूतों को आदेश देगा, कि तुम जहाँ कहीं भी जाओगे, वे तुम्हारी रक्षा करें'' (91:11)। ईश्वर उनके द्वारा हमारी रक्षा करता है। यहाँ तक कि ईश्वर अपने लोगों की मरूभूमि यात्रा के दौरान रक्षा करने के लिए भी अपने स्वर्गदूतों को भेजता है। हमारी यात्रा के दौरान भी भौतिक या आध्यात्मिक खतरे हो सकते हैं, किन्तु हमारे लिए यह कितने हर्ष की बात है, कि ईश्वर अपने स्वर्गदूतों की सेवा द्वारा हमारी भी रक्षा करेगा।

आइए, हम पिता ईश्वर को धन्यवाद दें, क्योंकि वह अपने स्वर्गदूतों द्वारा हमारी रक्षा करता है। हमें सुरक्षित रखता है। स्वर्गदूतों की भांति हम भी संपूर्ण रूप से अपने सृष्टिकर्ता की ओर मुड़ें। अपना पूरा विश्वास उस पर प्रकट करें, क्योंकि वह हमारी रक्षा करता है।

हम भी स्वर्गदूतों के समान कभी न समाप्त होने वाली आराधना स्तुति करें और ईश्वर के प्रति निष्ठावान तथा लोगों की भलाई करने की आदत को बढ़ावा दें। ईश्वर आपको आशीष दे।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**

(महाधर्माध्यक्ष, आगरा महाधर्मप्रांत)

Apostolic Nuncio's maiden visit to the Archdiocese

Agra, 12 Sept. His Excellency Archbishop Leopoldo Girelli, Papal Nuncio to India & Nepal visited the Archdiocese on 11-12 Sept. 2021. It was His Excellency's maiden visit to the city of love and Taj.

The prime purpose of his visit was to honour our Metropolitan Archbishop Most Rev. Dr. Raphy Manjaly with Pallium. He presided over the Holy Eucharist in St. Peter's College Auditorium, Agra.

Here below are some excerts from his inaugural address, at Pallium Ceremony:

The city of Agra which is well-known for its diversity and cultural heritage, has a fascinating history with centuries-old monuments and has been a nurturing ground for arts, music, poetry, crafts and literature. Though agriculture is a major occupation, tourism along with the industries of marble inlay, handicrafts, carpets, garments and leather, are an important source of livelihood. One cannot fail to mention the world-famous Taj Mahal, which is the most visited tourist place in India. Noteworthy in your city are various historical monuments including the Roman Catholic Martyrs' Cemetery and the present refurbished Church of Pieta, which was the first Catholic Church of Agra and Cathedral till 1848.

The Archdiocese, which is called the Mother Diocese of all the Dioceses of North India, has been blessed with a number of religious houses of men and women, a monastery of Poor Clares of St. Francis of Assisi, numerous educational institutes, *Sadbhavana* units for forstering inter- religious harmony and various social institutes such as a centre of 'differently-abled' children, a centre for children at risk, St. Joseph's Kitchen for the needy, and NGO working for healthcare and areas affected by malaria and other communcable diseases. However, given the many economic, social and pastoral challenges, including poverty and unemployment in your territory, you have an immense task ahead of you Abp. Raphy in building up the Kingdom of God.

- Fr. Moon Lazarus

संत पिता के राजदूत ने धर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि को पैलियम (अम्बरिका) देकर सम्मानित किया

आगरा, 12 सितम्बर। ''प्रभु यीशु आज भी हमारे बीच में हैं। उनकी शिक्षा और जीवन चरित्र हमें निरंतर चुनौती देती है। हरेक मसीही का यह मिशन और जिम्मेदारी है कि अपने व्यक्तिगत जीवन से समाज में सेवाकार्य और परस्पर सर्वधर्म संवाद को बढ़ावा दे...आर्चबिशप डॉ. राफी यह मेरी आशा है, कि आप सभी धर्माचार्यों और विशेषकर आगरा धर्मक्षेत्र के सभी धर्माचार्यों के साथ एकता व परस्पर सहयोग को बढ़ावा देंगे। साथ अपनी रेवड़ की प्रेमपूर्वक सेवा-सहायता करेंगे।'' वाटिकन सिटी और भारत व नेपाल में संत पिता फ्रांसिस के राजदूत महाधर्माध्यक्ष लिओपोल्डो जेरिली यहाँ सेंट पीटर्स कालेज के प्रेक्षागृह में एक विशेष मिस्सा बलिदान के समय सभा को सम्बोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर संत पिता के प्रतिनिधि ने महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि को पैलियम (अम्बरिका पट्ट) पहनाकर संत पिता की ओर से विशेष सम्मान और आध्यात्मिक अधिकार प्रदान किया। सामान्यत: यह अम्बरिका पट्ट (विशेष मिस्सा के दौरान महाधर्माचार्य द्वारा भेड़ के ऊन से बना पट्टा) सभी मेट्रोपोलिटन आर्चबिशपों को 29 जून सेंट पीटर और सेंट पॉल के महापर्व के अवसर पर वाटिकन सिटी में स्वयं संत पिता पहनाते हैं, किन्तु वर्तमान समय में कोरोना महामारी के कारण वाटिकन सिटी में यह संभव नहीं है, इसीलिए संत पिता के राजदूत ने स्वयं आगरा आकर इसे महाधर्माध्यक्ष डॉ. राफी मंजलि को यह पहनाया।

आज के इस भव्य समारोह में आगरा धर्मक्षेत्र (उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं उत्तराखण्ड) से दस धर्माचार्यों सहित ग्वालियर धर्मप्रांत से अपने ही धर्माचार्य श्रद्धेय जोसफ थाईकाट्टिल ने भाग लिया। कोरोना संक्रमण के प्रोटोकाल के कारण सीमित संख्या में अन्य लोगों ने भाग लिया। आगरा महाधर्मप्रांत से भी मात्र 35 पुरोहितों ने तथा धर्मप्रांत के सभी धार्मिक समुदायों (कम्युनिटीज़) एवं सभी पल्लियों से सिर्फ एक-एक प्रतिनिधि ने भाग लेकर प्रार्थना की।

मिस्सा के समय प्रवचन लखनऊ धर्मप्रांत के धर्माचार्य श्रद्धेय जेराल्ड मथायस ने दिया। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा, कि ''ईश्वर के प्रति ईमानदारी (वफादारी) के लिए तीन बातें, प्रभु ईश्वर का ज्ञान, उसमें कुछ दृढ़ विश्वास और उसके प्रति अटूट प्रेम अति आवश्यक है। प्रभु में विश्वास से ज्ञान मिलता है।'' गायन मण्डली का संचालन फादर विनिवर्सल डिसूजा ने किया।

मिस्सा के पश्चात प्रेक्षागृह में ही एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया गया। स्वागत महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि ने किया। इस अवसर पर सेंट फ्रांसिस स्कूल, सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के छात्रों, जीसस एण्ड मेरी धर्मसंघ की प्रशिक्षुक छात्राओं तथा कथीड्रल पल्ली के युवाओं ने मनोहारी सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किए। प्रान्तीय धर्माध्यक्षों की ओर से जयपुर के धर्माध्यक्ष श्रद्धेय ओस्वाल्ड लुईस तथा आगरा महाधर्मप्रांत के पुरोहितों की ओर से श्रद्धेय फादर जेकब पालामट्टम ने महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम के दौरान ही वाटिकन राजदूत ने मैट्रीमोनियल वेबसाइट का क्लिक दबाकर शुभारम्भ किया तथा निवर्तमान आर्चबिशप द्वारा तैयार पुस्तक ''वह व्यक्ति जो यीशु है'' का विमोचन किया। विमोचन के पश्चात इस पुस्तिका की एक-एक प्रति सभी धर्माचार्यों को भेंट स्वरूप दे दी गई। समस्त कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन फादर डॉमिनिक जार्ज ने किया। सायंकाल चाय पान के बाद महामहिम डॉ. लिओपोल्डो जेरिली सड़क मार्ग द्वारा वापिस नई दिल्ली चले गए।

'अग्रेडियन्स परिवार' महाधर्माचार्य डॉ. राफी मंजलि को संत पिता फ्रांसिस द्वारा दिए गए अम्बरिका पट्ट के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता है और आपके सुखद, सफल एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता है।

— फादर मून लाज़रस

Where is God in all of this?

Who would have ever imagined that a microscopic virus would invade the entire planet earth targeting human beings and would stop the world in its tracks?

There are people who have lost their jobs, are forced to move out of their homes for lack of money to pay rent. Not to mention the pain and agony of the people who are down with Coronavirus, living in make-shift hospital tents, being tended to by nurses in hazmat suits, and their families praying with hope that they will make it out alive. Or those who are dying and can't have their loved ones even to say goodbye to them in their last moments.

The repercussions of this are far-reaching and heartbreaking. It's been devastating for so many of us, and our hearts feel a culmination of pain from everywhere.

When faced with a pandemic of such kind, we get to see the meaninglessness of so many things in our lives. The superficial fancy clothes and expensive cars, what does that give us, ultimately? How much importance does that have right now? Or the planning and planning and saving for 'later', when,what if there is no later?

None of us was prepared for this outbreak. Some are led to ask how a good and loving God could allow pandemics such as this in our world. In times such as this, it is normal and natural to ask,"Where is God?" Some would conclude that struggles such as these are evidence for the non-existence of God.

Friends, hold on to your faith in God, especially at this time! Know that God cares for us despite the pandemic and its effects. In fact, we can take time in prayer to derive strength from God to bear the trials and tribulations of life, and overcome them. God is our solace and succor.

I would readily concede that the misery and the sense of loss endangered by the virus and related difficulties are beyond words. Still, I would endeavor to offer a few angles through which we can look at the situation and see whether we can still have faith in God:

FIRST, it is quite clear that denying the existence of God will not diminish the problem in any way. It is true that people are disposed to look at the sufferings, which are sometimes more than they can bear, and conclude that there is no God. But we have to be clear that the conclusion does not help in the alleviation or abolition of suffering. On the other hand, faith in God can give us the strength to bear the suffering, and bring us hope that, with God's grace and help, things will change for the better.

SECOND, for those who believe, God stays with us during our pain and never leaves us alone. As the Psalmist puts it, 'even in the deepest valleys of suffering, God is there'. The love shown by Jesus Christ on the cross affirms that God stays with us when we are afflicted. As a true friend stays with us when we are in pain. God, our Father and true friend, does not go away when we suffer, but stays with us.

THIRD, we have to acknowledge that we live in a fallen and broken world and suffering is a part and parcel of life. The present pandemic is a crisis delivered by nature. Here, we must accept the simple truth that you and I sometimes suffer not because of our own mistakes, but because

of others' faults, too. No one is exempt from suffering in this world.

FOURTH, we need to learn more readily to accept that life in this world is only a temporary one, and everlasting life begins when we live with God in heaven. This acceptance helps us to hold on to our faith in God and in eternal life that is not limited to our existence on earth.

Remember that we, human beings are resilient little creatures - that means you and me. Yes, you reading this right now! You are a resilient being and this crisis is going to make you stronger. This is a time for us, humans, to re-analyze the world we live in. To take a break from the rat race that is in society and find something authentic and true within ourselves.

The story of humanity will not end with us being annihilated by the coronavirus, we will overcome and will surely share our brave survival stories with generations to come.Hopefully, what will die out is an old stale form of society. Perhaps this is an opportunity for humankind to make a more sustainable world, not only for the planet but for us humans too.

"We must be willing to let go of the life we've planned, so as to have the life that is waiting for us." ~ Joseph Campbell

Stay Home, Stay Happy & Stay Safe!!!

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

The Holy Father's Prayer Intention

SEPTEMBER - 2021

Universal Intention - An Environmentally Sustainable Lifestyle: We pray that we all will make courageous choices for a simple and environmentally sustainable lifestyle, rejoicing in our young people who are resolutely committed to this.

कोरोना समस्या पर मंथन व समाधान की खोज

आज क्यों ब्रह्माण्ड त्राहि-त्राहि कर रहा है? क्यों हर रोज़ एक नई आपदा कहर बरपा रही है? वे कौन सी समस्याएं हैं, जिनके लिए हम तैयार नहीं हैं? जब दुनिया का हाल सुनते हैं तो रूह काँप उठती है। क्या कभी हम बेखौफ़ जी पाएंगे? क्या कभी हमारी आँखें स्वच्छ विचर पाएँगी? आइए, हम इन तमाम सवालों का जवाब ढूँढते हैं। हमारी नींव हिलाने वाली आपदा अभी गई नहीं है। हमारे बीच अब भी इसने पैर पसारे हुए हैं, जिस किसी को भी कोविड ने घेरा, उस पर अपनी गहरी छाप छोड़ दी।

एक छोटे से वायरस ने मानव शरीर के भीतर घुस कर परमाणु का काम किया। किसी के शरीर पर इसने घात किया, तो किसी की आत्मा पर। बिना पति, बिना बच्चे, बिना माता-पिता या बिना भाई-बहन जीवन कैसे संभव है? इतना सब कुछ होने के बावजूद भी दुनिया की गति मंद नहीं हुई! बाज़ारों में वही अफरा तफरी है। लोगों में वही होड़ है। पापी का पाप चर्म सीमा पर है और आसामी पैसा बटोरने में मग्न हैं। लोगों को अपनी करतूतों पर जरा भी शर्मिंदगी नहीं। लोग शारीरिक वासना से संचालित हैं, उनकी आत्मा का उनके शरीर पर इख्तियार नहीं।

मतवालापन समाज की शान बन गया है। एक कमजोरी दूसरी कमजोरी को जन्म दे रही है। लोग जल्दबाजी में रहते हैं उन्हें स्विच दबाते ही अपनी हर ख्वाहिश पूरी करनी है। प्रतीक्षा या धैर्य करना अब लोगों के शब्दकोष में नहीं हैं। आइये, हम नियमित रूप से प्रभु का वचन पढ़ें, उस पर मनन-चिंतन करें हर कार्य धैर्य से करें। खुद भी अच्छे बनें और दूसरों के सामने बेजोड़ उदाहरण दें। हर परिस्थिति का डट कर सामना करें।

अंजलीना मोसस, संत जूड पल्ली, आगरा

प्रभु यीशु महान है!

सृष्टि का प्रत्येक मनुष्य यह अच्छी प्रकार से जानता है कि परमेश्वर महान और शक्तिशाली सृष्टिकर्ता है, जिसने इस संसार के जड़, चेतन व जीव की रचना की है। धर्मशास्त्र भी यही कहता है कि 'उदयांचल से लेकर अस्तांचल तक यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है। (भजन संहिता 113:3), ''क्योंकि यहोवा जो आकाश का सृजनहार है, वही परमेश्वर है, उसी ने पृथ्वी को रचा है और बचाया उसी ने उसको स्थिर भी किया उसने उसे सुनसान रहने के लिए नहीं, परन्तु बसने के लिए उसे रचा है।'' (यशायाह 45:18)

आकाश की ओर अपनी आँखें उठाओ और पृथ्वी को निहारो क्योंकि आकाश धुएँ की नाईं लोप हो जाएगा, पृथ्वी कपड़े के समान पुरानी हो जाएगी और उसके रहने वाले यों ही जाते रहेंगे, परन्तु जो उद्धार मैं करूँगा वह सर्वदा ठहरेगा और मेरे धर्म का अन्त न होगा। (यशायाह 51:6) राजा दाऊद ने भी अपने वचन में कहा है, कि ''हे मेरे मन तू यहोवा को धन्य कह, हे मेरे परमेश्वर यहोवा तू अत्यन्त महान है। तू वैभव और ऐश्वर्य का वस्त्र पहने हुए है, जो उजियाले को चादर की तरह ओढ़े रहता है, और आकाश को तम्बू की तरह ताने रहता है, जो अपनी अटारियों की कड़ियाँ जल में धरता है, और मेघों को अपना रथ बनाता है और पवन के पंखों पर चलता है, जो पवनों को अपने दूत और धधकती आग को अपने टहलुए बनाता है। तूने पृथ्वी को उसकी नींव पर स्थिर किया है ताकि वह कभी न डगमगाए।'' (भजन संहिता 104:1-5)

परमेश्वर इतना शक्तिशाली और महान और कायनात का बनाने वाला तथा संहारकर्ता है। प्रभु यीशु बपतिस्मा लेकर जब पानी में से ऊपर आए तो उनके लिए आकाश खुल गया। यीशु ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा, तब यह आकाशवाणी हुई ''यह मेरा प्रिय मित्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।'' परमेश्वर ने प्रसन्नता भी जाहिर की तथा अपनी मालकियत का हकदार भी बनाया। अपना वारिस भी घोषित कर दिया। (मत्ती 3:16-17) लेकिन मनुष्यों ने उसे नहीं पहचाना, उसने चिल्ला कर कहा, ''हे यीशु नासरी हमें आपसे क्या काम? क्या आप हमें नष्ट करने आए हैं मैं आपको जानता हूँ कि आप कौन हैं? आप परमेश्वर के पवित्र जन हैं।'' (मरकुस 1:24) एक अशुद्ध आत्मा भी प्रभु यीशु की गवाही दे रही है कि आप एक पवित्र जन हैं।

जिसे सृष्टिकर्ता ने ग्रहण कर लिया हो वह तो महान से भी महान है। जिसने संसार से प्रेम की खातिर स्वयं अपनी बलि दे दी। इसलिए प्रिय अजीजों, जीवन चाहते हो तो औरों को जीवन देना सीखो, तभी असल में आप जी पाएंगे, अतीत की जमीन पर पैर टिकाए बगैर मैं उस आकाश की पहल नहीं कर सकता जहाँ मेरा भविष्य है। क्योंकि यीशु में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह निवास करती है। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, वह दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है।

एस.बी. सेमुएल, केन्द्रीय विद्यालय, आगरा

Marriage Preparation Course

Next Marriage Preparation Course will be held in **Archdiocesan Pastoral Centre, Wazirpura Road, Cathedral House, Agra.** The course will begin at **2nd Oct., from 4 p.m. to 3rd Oct. till 4 p.m. The registration fee is Rs 500/- per person.** Please do announce in your respective parishes. Interested candidates may contact:-

Fr. Maxim Satntosh D'Sa
(Director- Pastoral Centre)
Contact No. 9412340053

A Road to Excellence…

(My Experience at DVK, Bengaluru, Karnataka)

Dharmaram Vidya Kshetram (DVK) is a Pontifical Athenaeum for higher learning and formation, established on February 23, 1958 by the Congregation of Carmelites of Mary Immaculate (CMI) for Catholic Education and empowered to grant degrees in Philosophy and Theology.

Dharmaram is a realization of the dreams of many visionaries. From its inception, giving leadership in intellectual, spiritual and contextual formation to the priestly and religious nun candidates.

In the context of the ever-increasing importance of specialization and research DVK is taking into account by providing better facilities by creative contribution to the overall progress of the Church in India. Exhibiting its grandeur and intellectual ambience.

Having enrolled myself for Doctoral studies in Scriptures (2021- 2024), it was a great joy for me to enter into this campus on August 26, 2021 after a month-long virtual classes.

It is a citadel of excellence. Besides that, the flora and fauna adds extra beauty to the vicinity.We have 816 students on roll in the campus consisting of priests, religious nuns and seminarians from all over the country and overseas as well which includes 143 Dioceses and Religious Congregations. I am residing at DVK Research Centre, our block has 105 students pursing either Licentiate or Doctoral Studies in Theology and Philosophy.

I have started toiling my pre-doctoral requirements, i.e. two scientific papers and two tutorial seminars in Old Testament & New Testament (one each). Meanwhile, revising and brushing-up Greek and Hebrew languages again from level A - B - C.

We have Holy Mass in all three Rites (Latin, Syro-Malabar and Syro-Malankara), at different timings. The students are free to attend anyone as per their personal conviction and convenience.

What I like most in this campus is…

- Prayerful atmosphere & Community Life
- Study Culture & serious library work
- Very Competent staff and mangement
- Sound discipline
- And finally conducive weather

Hence, academic life goes on well with your prayers and God's blessings. We are safe and sound in the campus due to strict COVID protocol norms.

Fr. Alok Toppo, DVK, Bengaluru

Retreat for Religious Sisters

St. Joseph's Pastoral Centre, Agra is organising a Retreat for Religious Sisters. It is a golden opportunity for all specially who couldn't make it earlier due to Pandemic.

17 Oct. 9 pm to 22 Oct. 1 pm
Contribution Rs. 1500/- per head
(inclusive of board and lodge)
Preacher: Rev. Fr. Ronald Tellis
(Former Rector, St. Joseph's Seminary, Prayagraj)
Last date to register your name Oct. 1, 2021.
Contact:
Fr. Maxim Santosh D'Sa (Director)
(9412340053)
Sr. Monica (7457820053)

माता मरियम का जन्मोत्सव

8 सितम्बर को काथलिक कलीसिया माता मरियम का जन्म दिन मनाती है। माता मरियम जोआकिम व अन्ना की पुत्री हैं। धन्य कुंवारी मरियम जन्म से ही निष्पाप थीं। वह निष्कलंक थीं। उनके माता-पिता का जन्म दाऊद की वंशावली में हुआ था। यह वही वंशावली थी, जिसे परमेश्वर ने चुन लिया था। उसी में संसार के मुक्तिदाता मसीह ख्रीस्त का जन्म होने वाला था। माता मरियम का जब हम जन्मदिन मनाते हैं तो वह दिन हमें उतना ही प्यारा लगता है, जैसे हमारा अपना जन्मदिन।

हम उन्हें जन्मदिन मुबारक कहकर बुधाई दें। उनका जन्म आदि पाप से रहित था, उस अनादि सत्य में विश्वास हमें मरियम के व्यक्तित्व की श्रेष्ठता को स्वीकार करने तथा उसके अतुलनीय सद्गुणों का अनुकरण करने को बाध्य करता है। माता मरियम जो पाप रहित गर्भ में आई, शुद्धता एवं पवित्रता में जन्मी है। उसमें पाप बुराई से सुरक्षित रखने की शक्ति है। उसके प्रति हमारी भक्ति, हममें विश्वास की वृद्धि, भाईचारे और प्रेम सेवा की गहराई, सामाजिक न्याय के प्रति बोध एवं दरिद्रों की सेवा करने के प्रभावकारी फल उत्पन्न करने की कृपा हममें उत्पन्न करेगी। माता मरियम की (माला विनती की) हमें ख्रीस्तीय प्रेम एवं विश्वास पर आधारित ईश्वरीय आशा के प्रति संपूर्ण निष्ठा उनके व्यक्तित्व में साकार व पूर्ण हो गए हैं।

कोई भी व्यक्ति इस सत्य को स्वीकार किए बिना कि मरियम ख्रीस्त की माता है, ख्रीस्तीय विश्वास में सुदृढ़ नहीं हो सकता इसलिए हम माता मरियम पर श्रद्धा रखकर उसके आदर व प्यार में, अपने घरों, परिवारों, कलीसिया एवं पल्लियों में माता मरियम की माला विनती का जापकर माता मरियम के प्रति भक्ति में रम जाएं। इस प्रकार एक ख्रीस्तीय बनकर माता मरियम को अपनी माँ से भी बढ़कर प्रेम करें।

संत लूकस के सुसमाचार में हम पढ़ते हैं कि स्वर्गदूत गाब्रिएल ईश्वर की ओर से गलीलिया के नाजरेत नामक नगर में एक कुंवारी के पास भेजा गया। उसने माता मरियम के यहाँ आकर उससे कहा, ''प्रणाम, प्रभु की कृपापात्री! प्रभु आपके साथ है। आपको ईश्वर की कृपा प्राप्त है। देखिए आप गर्भवती होंगी, एक पुत्र प्रसव करेंगी और उसका नाम ईसा रखेंगी। वह महान होंगे और सर्वोच्च प्रभु के पुत्र कहलायेंगे। पवित्र आत्मा आप पर उतरेगा और सर्वोच्च प्रभु की शक्ति की छाया आप पर पड़ेगी। इसलिए जो आप से उत्पन्न होंगे, वह पवित्र होंगे और ईश्वर के पुत्र कहलायेंगे।'' इसलिए आप माँ मरियम को अपनी सगी माँ से ज्यादा प्रेम करें, क्योंकि वो समस्त संसार के प्रभु की माँ होने के साथ ही हमारे मुक्तिदाता प्रभु येसु व समस्त कलीसिया की भी माँ हैं।

मरियम का व्यक्तित्व एवं माता के रूप में उसकी भूमिका हमें प्रभु येसु ख्रीस्त की सच्चाई तक ले जाती है, निश्चय ही उस परम पवित्र ईश्वर का मनुष्य बनने के लिए निष्पाप स्त्री के रूप में माता मरियम की मध्यस्थता हमारे दैनिक जीवन में भी जरूरी है। अत: माता मरियम के जन्मोत्सव का पर्व हमें भक्तिपूर्वक मनाना चाहिए। उसके निष्कलंक गर्भागमन और स्वर्ग में उद्ग्रहण की आधारशिला मसीह की सच्चाई आवश्यक रूप से आदि पाप के प्रभाव से दूर मरियम के जन्म से सम्बन्धित है।

आइये, हम सभी माता मरियम के प्रति जो प्रभु येसु की माँ हैं और हमारी भी माँ हैं अपनी माला-विनती जाप द्वारा अपना प्रेम प्रकट करें। उनका आदर करें।

''हे निष्कलंक, निष्पाप माता मरियम, शांति की रानी, हमारे लिए प्रार्थना कर।''

सिरिल एन्थोनी, कथीड्रल पल्ली, आगरा

Saint Mother Teresa and the Face of God

"Seeking the face of God in everything, everyone, all the time and His hand in every happening: this means to be contemplative in the heart of the world. Seeking and adoring the presence of Jesus, especially in the lowly appearance of bread and in the distressing disguise of the poor" - St. Mother Teresa of Calcutta.

Saint Mother Teresa, by her heroic life's witness of seeking the face of Christ in the distressing disguise of the poor, perfectly exemplified how we Christians can live the works of mercy. When someone would ask her what they could do to serve, she was known for taking the person's hand and touching each finger, she would say "Yes, you did it to me". I was hungry and you gave me to eat, I was naked and you clothed me, I was sick and you visited me. "Whatever you did to the least of my brethren, you did it to me."

Mother Teresa's example points out to us the primary task of the Church, which as Pope Francis urges us, is to be "a herald of mercy", especially at a moment full of great hopes and signs of contradiction, to introduce everyone to the great mystery of God's mercy by contemplation on the "Face of Christ". The greatest desire of Saint Mother Teresa was to satiate the thirst of Jesus by serving Him in the poorest of the poor. Though suffering spiritual darkness in her own soul, she allowed the blazing brilliance of Christ's love to radiate through her face to others and she sought continually Jesus' face in those she served.

From her photograph, one can visualize her looking intensely into the faces of children, the poor, the sick and the dying, while tenderly caressing their faces, searching their face for the face of her beloved, Jesus! Pope Francis tells us, we must embrace with tender affection the whole of humanity, especially the poorest, the weakest, the least important, those whom Mathew lists in the final judgment on love, the hungry, the thirsty, the stranger, the naked, the sick and those in prison (Mt. 25:31).

Saint Mother Teresa heroically carried out the corporal and spiritual works of mercy by being the merciful face of Christ to others and by seeking the merciful face of Christ in others. Pope Benedict XVI characterized devotion to the Holy Face as having three separate components:

First element is discipleship and orientation of one's life towards an encounter of one's life towards an encounter with Jesus to see Jesus in the faces of those in need.

Second element relating to the passion of Jesus and suffering expressed by the images of the wounded face of Jesus. This image of Jesus crucified hung on the walls of Mother Teresa's room, was one of her last sights before dying.

Thirdly, the Eucharist is woven between the other two. The Eucharist was central to Mother Teresa's mission. She insisted that each Missionary of Charity begins his/her day in prayerful silence before the Eucharistic face of Jesus from whom one draws the strength to serve the poor.

Saint Mother Teresa pray for us, help us to recognize the face of Jesus and carry out the "works of mercy" so that we may contemplate the living face of "Christ's mercy".

Fr. Marian Lobo
Masih Vidyapeeth, Etmadpur, Agra

मेरे प्रभु की माता!

8 सितम्बर को हम सभी बड़े हर्ष और उल्लास के साथ अपनी प्यारी माँ, हमारे प्रभु की माता का जन्मोत्सव मनाते हैं। माँ मरियम की माला विनती पढ़ते समय हम माँ मरियम और प्रभु यीशु के जीवन की अलग-अलग घटनाओं को याद करते हैं। माँ मरियम की स्तुति गाते समय उन्हें रोगियों की माता, दु:खियों की सांत्वना आदि अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। पर आज हम पवित्र वचन (बाइबिल) के अनुसार माता मरियम के बारे में चिंतन करें तो दो बातें हमारे समक्ष आती हैं, ''मरियम ने कहा, ''देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ। आपका कथन मुझमें पूरा हो जाए।'' (लूकस 1:38) ''और धन्य हैं आप, जिन्होंने यह विश्वास किया कि प्रभु ने आप से जो कहा, वह पूरा हो जायेगा।'' (लूकस 1:45)

इन वचनों के द्वारा हम माँ मरियम के विषय में दो महत्वपूर्ण बातें जान सकते हैं। पहली, कि उन्होंने स्वयं को प्रभु इच्छा के प्रति दीन और समर्पित कर दिया। वह स्वयं कहती हैं, कि ''मैं प्रभु की दासी हूँ।'' दूसरी बात यह कि उन्होंने यह दृढ़ विश्वास किया कि जो उनसे कहा गया है वह पूरा होगा। आज हमें भी माँ मरियम के इन्ही दो गुणों को अपनाने की, अपने जीवन में उतारने की बेहद जरूरत है। एक माँ हमेशा यही चाहती है कि उसकी सन्तान उन्हीं अच्छाइयों को ग्रहण करे। माँ मरियम भी आज हमसे यही चाहती है कि हम प्रभु की इच्छा के प्रति समर्पित हों जैसे वह स्वयं थी, खुद को दीन बनायें। विनम्र बनकर प्रभु वचन पर दृढ़ विश्वास किया। यही वह हमसे चाहती है।

ज़करियस के पास भी स्वर्गदूत भेजा गया था, जैसा कि ईश वचन हमें बताता है, पर ज़करियस ने विश्वास नहीं, सवाल किया, किन्तु माता मरियम ने दीन हीन बनकर विश्वास किया और प्रभु का वचन उनके जीवन में वह महान फल लाया, जिसके कारण मानव जाति उन्हें धन्य कहती है। विनम्रता की पराकाष्ठा यह थी कि बिना कोई बुलावा आये, वह अपनी कुटुम्बनी एलिज़ाबेथ की सेवा करने स्वयं चली गयी। इस प्रकार उसने अपनी दीनता और विनम्रता का सबसे बड़ा उदाहरण दिया और यही नहीं आजीवन प्रभु येसु के साथ हमारी मुक्ति योजना में अपनी अहम भूमिका निभायी।

आइये, आज हम भी अपनी माँ से यही वरदान मांगें कि हमारा विश्वास भी प्रभु वचन में दृढ़ हो। हम भी माँ मरियम की भांति खुद को दीन और विनम्र बना सकें, कि हमारे जीवन में ईश्वर की जो योजना है, वह योजना पूरी हो। हे प्यारी माँ ईश्वरीय योजना को हमारे जीवन में जानने और उस पर चलने की कृपा हमें दिला दे। आमेन!

डॉ. डेज़ी, आर.सी. मिशन कम्पाउण्ड, आगरा

Rev. Fr. Joseph Dabre will be our new Vicar General

Agra, 25 Aug. His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, the Archbishop of Agra, has appointed Rev. Fr. Joseph Dabre new Vicar General of the Archdiocese. 'Fresh wine in new wine skins'. He will replace Msgr. Rev. Fr. Ignatius Miranda. The new V.G. will take over from 1st Sep. 2021. At present Fr. Dabre is the Parish Priest of St. Mary's Church, Agra.

Fr. Joseph Dabre was born 26 Dec 1961 in Bhuigaon, Vasai. He was ordained priest for the Archdiocese on 1 April 1990. Since then he has served the Archdiocese in various capacities, i.e. Parish Priest, Rector of St. Lawrence Seminary, Principal etc. As we congratulate Fr. Dabre, we also assure him of our prayers and support. We gratefully acknowledge the services rendered by Msgr. Fr. Ignatius Miranda, outgoing Vicar General.

Teachers' Day

"Teachers, the light of the world, the beacon in the dark and the hope that give us strength to survive".

September 5th is celebrated as Teachers' Day to commemorate the birth of a remarkable Indian scholar, Dr. Sarvapali Radhakrishnan. He was the first Indian to teach in the prestigious Oxford University. He served as the first Vice President and the second President of India. When his students asked him to celebrate his birthday, he said that his birthday should be dedicated to all the teachers and to celebrate it as "Teachers' Day'. He was very popular among his students and was highly devoted towards education.

Teachers are the backbone of any society. They are like second parents who have a good influence on our lives and whenever we need them they are always present to help us to get out of a problem. They develop our overall character and personality which make us confident individuals and provide the strength to deal with all sorts of problems in our lives. Teachers not only build the life of only one student, but the entire GENERATION through their ideas and knowledge. They are the first guiding step in this big, bad world without a mentor over our heads, a guide to distinguish right from wrong, we will all be BODIES WITHOUT SPIRIT.

Teachers may not always be confined to the four walls of the Schools. They may come in the form of parents, siblings, soul mates or friends. The small moments with these special people in our lives often leave us spell bound with the lessons we may never learn otherwise.

When we talk of teachers, I believe that Jesus was one of the best teachers of life. He taught people everywhere He met them. He taught them at the sea shore and on boats. He taught them in homes and when traveling. Jesus walked from place to place, teaching people and proclaiming the Good News.

Jesus was a great teacher as He knew how to make things interesting to people. He explained things in a simple, clear way - He spoke about birds, flowers, fig trees and other ordinary things to help people understand about God. He gave important teachings in the form of parables. The teaching style of Jesus held the attention of those who heard Him.

So, on the occasion of 'Teacher's Day', we should spare some time to thank and express our gratitude to all our teachers and all those who have taught us some important lesson of life.

Jibi Lukose, St. Mary's Parish, Agra

संत मदर टेरेसा (कोलकाता) की पुण्य तिथि एवं सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्मोत्सव (शिक्षक दिवस) के अवसर पर शत् शत् नमन!

—: अग्रेडियन्स परिवार :—

हिन्दी दिवस पर विशेषः

विचारों की अभिव्यक्ति व विश्व एकता की शक्ति - हिन्दी

''भारत माता के ललाट पर जो चमचम करती बिंदी है,
वही हमारे राष्ट्र की संवाहक भाषा हिंदी है।''

कविवर सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की उपरोक्त पंक्तियां हिंदी भाषा की महिमा का बखान करती हैं। हिंदी पूरे विश्व में बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। यह सम्पूर्ण विश्व के 206 देशों में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में प्रयोग की जाती है इतना ही नहीं यह विश्व के 64 करोड़ लोगों की मातृभाषा तथा 24 करोड़ लोगों की दूसरी दर्जे की भाषा और 42 करोड़ लोगों की तीसरी, चौथी या अन्य भाषा के रूप में अपना परचम फहरा रही है। विश्व के एक अरब 30 करोड़ लोग हिन्दी बोलते समझते हैं; अर्थात् विश्व के सभी 206 देश में हिंदी अपने पैर पसार चुकी है। यह हम हिन्दुस्तानियों के लिए बड़े गर्व की बात है। विश्व के अधिकांश हिंदी भाषा को अपनाए हुए इसकी जोरदार हिमायत भी करते हैं, जिसमें फिज़ी, मॉरीशस, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, युगांडा, सूरीनाम, पोलैण्ड, रूस, न्यूजीलैण्ड, चीन, जापान, नेपाल और खाड़ी देश प्रमुख हैं। फिजी में तो कक्षा आठ तक हिंदी अनिवार्य विषय है। अमेरिका के 67 महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। चीन के 40-50 विश्वविद्यालयों में हिन्दी स्थापित है। भारत सरकार ने भी 42 राष्ट्रों में 28 हजार से अधिक संस्थाएं सांस्कृतिक हिन्दी विद्यापीठों की स्थापना की हुई हैं। रूस, यूरोप और अंग्रेजी राष्ट्रों में भी उनके विश्वविद्यालय हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दे रहे हैं। हिंदी विश्वस्तरीय समृद्ध भाषा है। अब तो विश्व के बहुत से देशों में हिंदी साहित्यिक विषय के रूप में पढ़ायी जा रही है। जिन देशों में भारतवंशी हैं वहाँ हिंदी का प्रचुर फैलाव हो चुका है।

ई-पेपर, ई-पत्रिकाएं, ई-बुक्स के माध्यम से भी विश्व भर में 94% हिंदी का इजाफा हो गया है। तमाम देशों में हिंदी के रचनाकार तेजी से उभर रहे हैं। लेकिन यह भी एक बड़ी विडम्बना है, हिन्दुस्तान में हिंदी दिवस का मनाया जाना। 9 सितम्बर से हिंदी पखवाड़ा से प्रारम्भ होकर 14 सितम्बर हिंदी दिवस पर पटाक्षेप।

मित्रों! क्या कभी आपने अंग्रेजी, फारसी, इब्रानी, लातीनी, फ्रेंच या गुजराती, पंजाबी, मलयालम या राजस्थानी दिवस मनाने की बात देखी या सुनी है? अन्य भाषा दिवस? बस हिंदी दिवस ही जोर-शोर से मनाया जाता है क्यों? शायद हमारे इस बहुभाषी देश में हिन्दी से भी कुछ राजनैतिक लाभ होता है। इसलिए 25 मार्च 2015 में गृह मंत्रालय के आदेशानुसार हिंदी दिवस पर दिए जाने वाले दो पुरस्कारों इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार और राजीव गांधी ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार के नाम बदल दिए गए। अब इसे राजभाषा गौरव पुरस्कार कहते हैं।

आइए जाने हिंदी दिवस मनाने का कारण- सन 1918 में जब गांधी जी ने हिंदी को राजभाषा बनाने का प्रस्ताव रखा तब भी खूब विरोध था। इससे पहले ब्योहार राजेन्द्र सिन्हा ने भी इसे राजभाषा बनाने के लिए लम्बा संघर्ष किया। बाद में 14 सितम्बर 1949 को संविधान में सभी ने एकमत होकर निर्णय लिया कि हिंदी ही भारत की राजभाषा होगी। भारतीय संविधान भाग 17 के अध्याय 343 (1) में हिन्दी को राजभाषा और इसकी लिपि को देवनागरी कहा। 26 जनवरी 1950 को हिंदी आधिकारिक रूप से राजभाषा बनकर स्थापित हो गयी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के तहत हिंदी दिवस मनाया जाने लगा। 10 जनवरी 1975 को नागपुर में भी पहला विश्व हिंदी दिवस मनाया गया।

शेष अगले पृष्ठ पर...

Exaltation of the Holy Cross
(September 14)

The History of the Exaltation of the Holy Cross : Early in the fourth century, Saint Helena, mother of the Roman Emperor Constantine, went to Jerusalem in search of the holy places of Christ's life. She razed the second-century Temple of Aphrodite, which tradition held, was built over the Savior's tomb, and her son built the Basilica of the Holy Sepulcher on that spot. During the excavation, workers found three crosses. Legend has it that the one on which Jesus died was identified when its touch healed a dying woman.

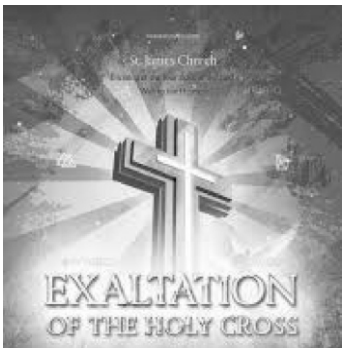

The cross immediately became an object of veneration. At a Good Friday celebration in Jerusalem toward the end of the fourth century, according to an eyewitness, the wood was taken out of its silver container and placed on a table together with the inscription Pilate ordered placed above Jesus' head: Then "all the people pass through one by one; all of them bow down, touching the cross and the inscription, first with their foreheads, then with their eyes; and, after kissing the cross, they move on."

To this day, the Eastern Churches, Catholic and Orthodox alike, celebrate the Exaltation of the Holy Cross on 14th September anniversary of the basilica's dedication. The feast entered the Western calendar in the seventh century after Emperor Heraclius recovered the cross from the Persians, who had carried it off in 614, 15 years earlier. According to the story, the emperor intended to carry the cross back into Jerusalem himself, but was unable to move forward until he took off his imperial garb and became a barefoot pilgrim.

हिन्दी दिवस.... पृष्ठ 14 का शेष

आज अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी धड़ल्ले से बोली जा रही है। नेपाल में 80 लाख और अमेरिका में लगभग 7 लाख लोग हिंदी बोलते समझते हैं। खाड़ी देशों में भी हिंदी लोकप्रिय है। विश्व के कुछ देशों ने तो हिंदी को द्वितीय राजभाषा के रूप में मान्यता दी हुई है।

मित्रों! लेकिन यह सोचनीय है कि हिंदी के प्रचारित प्रसारित करने के उद्देश्य से मनाया जाने वाला यह दिवस अपने ही देश में बेबस नजर आता है क्योंकि यह मधुर मीठी भाषा राजनीति की भेंट चढ़ गयी है। हमारे बहुभाषी देश में प्रान्तीय भाषा के झगड़े जग-जाहिर हैं। हम सब दोषी हैं आज भी हिंदी भाषी को हीन (चाहे कितना उच्च शिक्षित हो) और अंग्रेजी बोलने वाले को आधुनिक (ज्यादा पढ़ा-लिखा) समझा जाता है। हिंदी बोलने वाला पिछड़ा और अंग्रेजी भाषी स्मार्ट। है न यही बात! अंग्रेजी बोलने वाले से लोग जल्द प्रभावित हो जाते हैं। ऐसा क्यों?

जबकि आज स्थिति यह है कि हम न अपनी हिंदी ही पूरी तरह समझ पाए, न ही अंग्रेजी के ज्ञाता हुए। बस हिंग्लिश में फर्राटा भर रहे हैं। मिक्स-मसाला हिंग्लिश... हिंग्लिश अब आप कहेंगे हिंग्लिश से आपको क्या प्रॉब्लम है? तो मित्रों! मैं तो यही कहूँगी कि इस मानसिकता को बदलिए, गर्व से कहिए '***हिन्दी हैं हम, वतन है, हिन्दोस्तां हमारा।***' हिंदी को प्रयोग करने में मत झिझकिए। राष्ट्रभाषा से ही देश की पहचान है।

देशवासी होने के नाते मेरी और आपकी जिम्मेदारी है कि राष्ट्रभाषा का सम्मान ही नहीं करना बल्कि उसे स्थापित करना हमारा परम कर्तव्य भी है।

निशी अगस्टीन (सह-सम्पादिका) अग्रेडियन्स

"The Influence of Good Models and Teachers can never be erased."

As we celebrate Teachers' Day on 5th September, we can not forget the influence of two inspiring Models Blessed Brigida Morello the foundress of the Ursulines of Mary Immaculate (UMI) and St. Teresa of Kolkota the foundress of the Missionaries of Charity (M.C.) whose days of rememberance falls on 4th and 5th September. Down the centuries education has played a significant role in imparting the value system and building up a future for the society. A good teacher influences a student until the end of his life.

Blessed Brigida was a great educationist who lived between 1610-1679. Having such an incredible foresight in educating the youth ,who are the future of a nation, her vision of education was focused on moral, intellectual and integral development based on the Gospel values of truth, social justice, universal love, global peace and forgiveness, to prepare the young people to be fully human and fully alive to the needs of the Church, and the world at large.

As a Religious Foundress and an educator, Blessed Brigida affirmed that the aim of the Ursuline Congregation is the perfect love of God and of neighbour. It is amazing that in a contury highly biased against women, where words like education of the girl-child and women empowerment were unheard, there lived a versatile woman of high sanctity who read the signs of the times. She had been ahead of her times by giving great importance to the character formation, education & promotion of women and recognition of their dignity as concerns of that age. She educated girls and women so as to make them agents of social change, teachers of Catholic Faith and strong home makers in families.

Mother Teresa who lived between 1910-1997 is regarded and adored as the 'Saint of the Gutters' even when she was alive. 'Teachers' Day' has traditionally been observed in India on September 5th as a tribute to the late President of India, Dr. Sarvapalli Radhakrishnan, who besides being a great educationist and philosopher, also believed that education is the key to India's inclusive development.

Coincidently, Mother Teresa died on September 5, 1997. As a young nun in the Loretto Convent, Mother Teresa was trained to be a teacher. She embraced this profession with great love and dedication. Her "call within call", demanded her to leave the Loretto Congregation and to dedicate herself to serve the "poorest of the poor "but she never stopped being a teacher! Without a classroom, desks, chalk, board, paper and other requirements, she began her first class for the unschooled children, the slum children, by scribbling alphabets on the wet ground. She taught and continues to do so, through her Sisters of the Missionaries of Charity, practical lessons in the global classrooms spread across countries. She spared no efforts in bringing light and joy in the life of suffering millions, through the value of

serving others joyfully . Through her practical , concrete actions and words she teaches the greatness of little things, "Not all of us can do great things. But we can do small things with great love". She in her humility attributes all good actions to God, "I am only an instrument in the hands of God".

Mother Teresa loved and served the poor, less-privileged and taught valuable lessons to mankind because she saw God in suffering humanity. She and her Sisters have helped people to die dignified, made discarded children the winners and successful entrepreneurs. The official conferring of Sainthood by Pope Francis is a fitting gift to this humble but profoundly edifying teacher around the occasion of Teachers' Day.

Jesus is the greatest teacher ever lived. Jesus walked the talk. For Mother Brigida and Mother Teresa, Jesus was the Master Teacher; and they did all they could to communicate His values to those around them. Over the years they became the embodiment of many values but highest among them were the values of Jesus: Compassion, Courage and Commitment. They taught others by their life example.

In fact, they challenge us, those who are engaged in the mission of education, to have the sacred duty to scientifically discover, critically interpret and prophetically respond to the signs of the time and existing realities. We, who are privileged to be the educators are called not only to be teachers but also to be motivator, counselors and guides to our students,our families,friends,co-workers,neighbours or anyone else who come into our sphere of influence. Like the ripples caused by a stone dropped into a calm pool of water, our example has far-reaching effects on others. Everyday we are presented with opportunities to teach by our examples. We can always inspire and instill in the new generation, values for their life and accompany them as graced companions. Let God be glorified and let the Nation receive responsible citizens through our effort as Models and Teachers . Wishing every mentor, motivator, in any sphere of life, Happy Teachers' Day .

– Sr. Anjali, UMI

DATES TO REMEMBER

SEPTEMBER

02 B.D. Fr. Shiju Palippadan
11 D.A. Fr. Thomas Paramundayil
20 B.D. Fr. Dennis D'Souza

SMILE

Happiness can be a disease or
an addiction too,
You can be responsible to spread it like the flu.
The moon has scars
The rose has thorns
The light has darkness
But, the more you smile.
The person walking by you will wear
your smile all day
The more smiles you give,
The more smiles you get in return
Sometimes I ask myself 'Are we alive?'
It seems that we are giving shape
to another's life
We forget to smile, forget
Forget to breathe
We don't give our life a little time to ease.

Bro. Puneet Pascal, MVP, Agra

बेसहारों की आशा; प्रेम करूणा की विशिष्ट परिभाषा, जिसका प्रेम अनन्त, वही है सन्त - मदर टेरेसा

हृदय की गहराइयों से की गयी सेवा ही सही अर्थों में सच्ची मानवता है। बेसहारा लोगों को अपने करूणामयी आंचल की छांव देने का अद्वितीय योगदान मदर टेरेसा जैसे विरले ही कर सकते हैं। उनके अनूठे प्रेम के आगे आज सम्पूर्ण मानवजाति गौरवान्वित है। इस अतुलनीय आत्मा को अति सम्मानित शब्द नि:सन्देह 'संत' ही है। संत मदर टेरेसा।

सर्वसम्मान, पारितोषिक से भी ऊपर, ईश्वरीय मुकुट से सुशोभित मदर टेरेसा को इस विश्वभूमि पर पहले भी अनेकों सम्मान से अलंकृत किया जा चुका है, आइए! इन्हें भी जानें:-

- 26 जनवरी 1962: भारत का पदमश्री पुरस्कार। भारत से बाहर जन्मे, भारत में पहली बार किसी व्यक्ति को यह पुरस्कार मिला।
- अप्रैल 1962: फिलीपींस का 'रेमन मैग्सेसे' अवार्ड
- दिसम्बर 1964: सन्त पापा ने मदर को वेटिकन आमंत्रित कर उन्हें बेशकीमती कार भेंट की, किन्तु कार की कीमत की धनराशि ही मदर टेरेसा ने स्वीकार कर उससे निर्धन बच्चों की सेवा की।
- 6 जनवरी 1971: सन्त पापा पॉल 23वें का 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार'
- 1971 का न्यूयार्क 'गुड समारितन' अवार्ड तथा अमेरिका का जोजफ कैनेडी जूनियर अन्तर्राष्ट्रीय फाउण्डेशन अवार्ड और अमेरिका का ही डॉक्टर ऑफ ह्यूमन लेटर्स अवार्ड।
- 1972: पं. जवाहरलाल नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार।
- 1972: मैग्ही एन्जिल ऑफ चैरिटी होम अवार्ड से सम्मानित
- 1973: टैम्प्लेटन प्राइज़
- 1975: एल्बर्ट स्विडजर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार
- 1978: ब्रिटिश सरकार द्वारा ओ.बी.ई. अवार्ड
- 1979: नोबेल शान्ति पुरस्कार से अलंकृत
- 1980: भारत रत्न की उपाधि से अलंकृत
- 1982: असीसी की नागरिकता तथा विश्व नागरिकता सम्मान
- 24 नवम्बर 1983: लंदन का आर्डर ऑफ मेरिट अवार्ड
- 1985: प्रैजीडेन्शियल मेडल ऑफ फ्रीडम
- 15 नवम्बर 1990: सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार
- 8 नवम्बर 1992: भारत की महान सुपुत्री का सम्मान व पुरस्कार, साथ ही भारत शिरोमणि पुरस्कार से सम्मानित
- दिसम्बर 1992: क्रिटिकल क्लब इंडिया द्वारा भारत श्रेष्ठ अवार्ड
- 1992: श्रम बाल प्रतिष्ठान द्वारा वॉल्सराय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार
- 20 अगस्त 1983: राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार
- 24 सितम्बर 1993: डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप पुरस्कार
- 15 नवम्बर 1993: स्व. इन्दिरा गांधी के नाम पर स्थापित प्रतिष्ठित पुरस्कार 'प्रियदर्शिनी अवार्ड'। इन्दिरा गांधी द्वारा एक अन्य पुरस्कार भारत के किसी भी क्षेत्र में हवाई जहाज व रेलगाड़ी से बिना टिकट यात्रा कर सकती हैं।
- 18 दिसम्बर 1993: यूनेस्को का शान्ति शिक्षा पुरस्कार
- 1994: ऐल्वेनियाज गोल्ड ऑनर ऑफ द नेशन अवार्ड
- 12 सितम्बर 1996: अमेरिकी नागरिकता सम्मान तथा इसी वर्ष बिरसा मुण्डा अवार्ड भी दिया गया।
- 27 नवम्बर 1996: मदर टेरेसा की जन्मभूमि अल्बानिया द्वारा राष्ट्र का सर्वोच्च गोल्डन अवार्ड

- मदर टेरेसा की जन्मभूमि द्वारा दिया गया पुरस्कार उनका अन्तिम सम्मान था। यह मात्र संयोग था। सम्मान सूची की श्रृंखला में अभी और भी कई अवार्ड हैं। लेकिन मदर टेरेसा का कहना था- ''मैं सफलता के लिए प्रार्थना नहीं करती, मैं विश्वास के लिए प्रभु से याचना करती हूँ।'' यदि तुम लोगों को आंकते रहोगे, तो उन्हें प्रेम करने के लिए तुम्हारे पास समय ही नहीं बचेगा। मदर टेरेसा ने सभी पुरस्कारों को विनम्रता पूर्वक ग्रहण किया और जहां तक सम्भव हुआ उन्हें धनराशि में तब्दील कर उसे निर्धनों, असहायों, बीमारों की सेवा में लगा दिया।

मदर टेरेसा को अनेकों महाविद्यालयों ने भी डॉक्टर की उपाधि से सुशोभित किया। जैसे-

- सैनडियेगी महाविद्यालय
- हावर्ड महाविद्यालय
- मद्रास महाविद्यालय
- विश्व भारती
- कैम्ब्रिज महाविद्यालय
- काथलिक महाविद्यालय
- 4 सितम्बर 2016 को सन्त पापा फ्रांसिस द्वारा '**सन्त**' की उपाधि से अलंकृत।

सन्त मदर टेरेसा हम पर अपनी करूणा बरसाएं।

निशी अगस्टीन

सह-सम्पादिका, अग्रेडियन्स

Lincoln's Letter to his son's teacher...

Respected Teacher,

My son will have to learn I know that all men are not just, all men are not true. But teach him also that for every scoundrel there is a hero; that for every selfish politician, there is a dedicated leader. Teach him that for every enemy there is a friend.

It will take time, I know; but teach him, if you can, that a dollar earned is far more valuable than five found.

Teach him to learn to lose and also to enjoy winning. Steer him away from envy, if you can.

Teach him the secret of quite laughter. Let him learn early that the bullies are the easiest to tick.

Teach him, if you can, the wonder of books., but also give him quiet time to ponder over the eternal mystery of birds in the sky, bees in the sun, and flowers on a green hill-side.

In school teach him it is far more honourable to fail than to cheat.

Teach him to have faith in his own ideas, even if every one tells him they are wrong.

Teach him to be gentle with gentle people and tough with the tough.

Try to give my son the strength not to follow the crowd when every one is getting on the bandwagon.

Teach him to listen to all men but teach him also to filter all he hears on a screen of truth and take only the good that comes through.

Teach him, if you can, how to laugh when he is sad. Teach him there is no shame in tears. Teach him to scoff at cynics and to beware of too much sweetness.

Teach him to sell his brawn and brain to the highest bidders; but never to put a price tag on his heart and soul.

Teach him to close his ears to a howling mob... and to stand and fight if he thinks he's right.

Treat him gently; but do not cuddle him because only the test of fire makes fine steel.

Let him have the courage to be impatient, let him have the patience to be brave. Teaching him always to have sublime faith in himself because then he will always have sublime faith in mankind.

This is a big order; but see what you can do. He is such a fine little fellow, my son.

"Little Things": Special Feature on "Teachers' Day"

Why do we celebrate Teacher's Day? Its a special day kept aside to honour and celebrate great teachers in our lives who impart their wisdom and how selflessly they are droven for their cause. But is it just restricted to our school teachers and professors. I believe being a teacher has much greater meaning to it.

Simpliy giving all the affection one day and forgetting the next day since the day has passed and we have moved on that's not how we should celebrate it. When it comes to Teachers' Day celebration we should be celebrating it everyday, appreciating then everyday with same respect and admiration.

Since the moment we are born our parents are our first teachers from teaching us how to walk, hearing our first words, then we become older go to school and college where we meet more wonderful people and learn various aspects of life and academics. A very important place where we learn so much as Church, the house of God. The readings from the Bible and the wonderful sermons given by the priest every Sunday where they shed light on the important teachng of God and sharing their experience and inspiring the people how they embrace the path of God, which in turn makes us want to follow the same path.

Life is a wonderful journey of learning. We also have the role of a teacher in someone's life ever if we ever realize it. Even if we are meeting someone for a second, we make an impact on their lives and so do they. Its like wherever we go we make small ripples in the water.

All of these little daily experiences and all the people whether they are our own parents, friends, teachers, religious leaders or a random stranger who we happen to be observing while he or she was doing an act of kindess are like different colours, we take on these different shades to form a beautiful rainbow. But its God who sheds His light on us that makes us shine ever so beautifully. He's the most important Teacher in our lives from the moment we aren't ever born yet to ever after our death. Its his who is always holding our hand and walking with us in our journey of life irrespective of its a garden of roses or through ragging fire, He never let goes of our hand.

- Sherin Bobin, St. Mary's Church, Agra

तू जननी है तू धरती है, तुझे पाकर मानव धन्य हुआ।
तूने ही मुझको जन्म दिया, तूने ही मुझको पाला है।
उस प्यार की मैं आभारी हूँ, जिस प्यार ने मुझको सींचा है।
मेरी हर धड़कन में तू ही है, मेरे अंतर मन में तू ही है।
तू बादल है तू छाया है, तेरे आगोश में संसार समाया है।
तू भूख है तू प्यास है, तू जिन्दा रहने की आस है।
माँ जैसा शीतल शब्द नहीं,
माँ के आदर में नत-मस्तक हुए ऋषि-मुनि।
डूबते का किनारा है तू, जीने का सहारा तू।
तेरे बिना दुनिया है अधूरी, तू ही है दुनिया की आखिरी पूँजी।
भोली है तू हर गलती माफ करती है,
धूल हटाकर तो देखो दिलों के मैलों को साफ करती है
दुनिया में हर वस्तु का विकल्प है,
पर माँ का विकल्प दुनिया के अंत तक नहीं।
कितनी भी अठखेलियाँ करले जमाना,
पर अंत में उसे पड़ता है माँ के चरणों में आना।

अंजलीना मोसस, कौलक्खा, आगरा

Saint of the Month

St. Vincent De Paul

Feast Day : 27 September

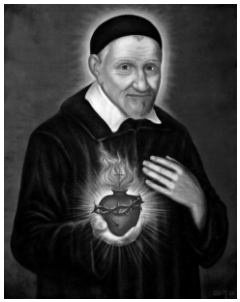

St. Vincent de Paul was born to a poor peasant family in the French village of Pouy on April 24, 1581. His first formal education was provided by the Franciscans. He did so well, he was hired to tutor the children of a nearby wealthy family. He used the monies he earned from teaching to continue his formal studies at the University of Toulose where he studied theology.

He was ordained in 1600 and remained in Toulose for a time. In 1605, while on a ship traveling from Marseilles to Narbone, he was captured, brought to Tunis and sold as a slave. Two years later he and his master managed to escape and both returned to France.

St. Vincent went to Avignon and later to Rome to continue his studies. While there he became a chaplain to the Count of Goigny and was placed in charge of distributing money to the deserving poor. He became pastor of a small parish in Clichy for a short period of time, while also serving as a tutor and spiritual director.

From that point forward he spent his life preaching missions to and providing relief to the poor. He even established hospitals for them. This work became his passion. He later extended his concern and ministry to convicts. The need to evangelize and assist these souls was so great and the demands beyond his own ability to meet that he founded the Ladies of Charity, a lay institute of women, to help, as well as a religious institute of priests - the Congregation of Priests of the Mission, commonly referred to now as the Vincentians.

This was at a time when there were not many priests in France and what priests there were, were neither well-formed nor faithful to their way of life. Vincent helped reform the clergy and the manner in which they were instructed and prepared for the priesthood. He did this first through the presentation of retreats and later by helping develop a precursor to our modern day seminaries. At one point his community was directing 53 upper level seminaries. His retreats, open to priests and laymen, were so well attended that it is said he infused a "Christian spirit among more than 20,000 persons in his last 23 years."

The Vincentians remain with us today with nearly 4,000 members in 86 countries. In addition to his order of Vincentian priests, St. Vincent cofounded the Daughters of Charity along with St. Louise de Marillac. There are more than 18,000 Daughters today serving the needs of the poor in 94 countries. He was eighty years old when he died in Paris on September 27, 1660.He had "become the symbol of the successful reform of the French Church". St. Vincent is sometimes referred to as "The Apostle of Charity" and "The Father of the Poor".

His incorrupt heart can be found in the Convent of the Sisters of Charity and his bones have been embedded in a wax effigy of the Saint located at the Church of the Lazarist Mission. Both sites are located in Paris, France.

Two miracles have been attributed to St Vincent - a nun cured of ulcers and a laywoman cured of paralysis. As a result of the first, Pope Benedict XIII beatified him on August 13, 1729. Less than 8 years later (on June 16, 1737) he was canonized by Pope Clement XIII. The Bull of Canonization recognized Vincent for his charity and reform of the clergy, as well as for his early role in opposing Jansenism. St. Vincent; Father of Poor, Pray for us!

–Fr. Vinesh Joseph, Ajay Nagar

'प्रभु के साथ एक रात' कथीड्रल में हुआ रात्रि जागरण

आगरा, 30 जुलाई। कथीड्रल पल्ली, आगरा में शुक्रवार को रात्रि आराधना का आयोजन किया गया। पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर इग्नेशियस मिराण्डा ने इस आराधना को धन्यवाद के रूप में पिता परमेश्वर से मिली सभी आशीषों के लिए, विशेष करके कोरोना महामारी से बचाकर रखने के लिए ईश्वर को धन्यवाद के रूप में अर्पित किया। कथीड्रल प्रांगण के पुरोहितों, धर्मबहनों और पल्ली के विश्वासियों ने इस रात्रि आराधना में भाग लिया। विभिन्न पुरोहितों ने क्रमवार प्रभु का वचन सुना कर ईश्वर की स्तुति आराधना की। फादर ग्रेगरी थरायल, फादर जेकब, फादर अमित डॉमिनिक, फादर जोसफ रॉड्रिग्ज, फादर जमिल्टन ने इस आराधना में प्रभु का वचन घोषित कर प्रभु की आराधना की। भोर में पवित्र मिस्सा बलिदान के साथ रात्रि जागरण समाप्त हुआ। मिस्सा बलिदान महाधर्माध्यक्ष राफी मंजलि द्वारा धन्यवाद की मिस्सा के रूप में अर्पित किया गया।

रात में विश्वासियों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था की गई थी। अगले रात्रि जागरण के दौरान पाप स्वीकार संस्कार और काउंसिलिंग की व्यवस्था भी रहेगी।

फा. विनिवर्सल डिसूजा, सहायक पल्ली पुरोहित

पारिवारिक बाईबिल क्विज़ में फा. लुईस खैस ने बाज़ी मारी, सि. अब्रोसिया को सांत्वना पुरस्कार

आगरा, 31 जुलाई। महान संत इग्नेशियुस के पर्व के अवसर पर पारिवारिक बाईबिल क्विज़ (2) के चिर प्रतीक्षित परिणामों की घोषणा की गई। क्विज़ की यह दूसरी लहर (कोरोना की भी दूसरे लहर-महाप्रकोप) के समय ही आयोजित की गई थी। विषय था; प्रेरित चरित एवं संत पौलुस के पत्र। जहाँ बाईबिल क्विज़ के प्रथम चरण (मार्च 2020) में 350 लोगों ने भाग लिया था, वहीं इस बार मात्र 320 प्रतिभागियों ने भाग लिया। धर्मसंघियों और पुरोहितों की रूचि भी इस बार कम हो गई - संभवत ये लोग कोरोनो पीड़ितों की सहायता, सेवा-सुश्रुषा में व्यस्त थे... काश...कि ऐसा ही होता!!!

इस बार मात्र 40 धर्मसंघियों ने भाग लिया, जो गत वर्ष की तुलना में बहुत कम थे। सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के सहायक रेक्टर फादर लुईस खैस ने 610 में से 606 अंक प्राप्त किए। वही सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा की वयोवृद्ध 84 वर्षीय सिस्टर अम्ब्रोसिया (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी) ने धर्मसंघी

वर्ग में तीसरा सांत्वना पुरस्कार प्राप्त कर जहाँ सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा का नाम एक बार फिर से रौशन कर दिया, वहीं नौजवान फादर्स – सिस्टर्स के सामने खुली चुनौती रख दी, कि जब मैं इतनी उम्र में भी इतनी मेहनत, इतना प्रयास कर सकती हूँ, तो तुम क्यों नहीं कर सकती हो? सिस्टर अम्ब्रोसिया को फादर प्रकाश रॉड्रिग्ज़ ने एक प्रशस्ति पत्र (शील्ड) और विजय राशि एक हज़ार रूपये नकद प्रदान किए। **—खबरीनन्दन**

महिला शांति सेना ने करवाई कैदी की रिहाई

आगरा, 15 अगस्त। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में महिला शांति सेना द्वारा आगरा जिला कारागार में सजा काट चुके कैदी को, जिसके पास सजा खत्म होने के बाद जमानत राशि भरने के लिए पैसे नहीं थे, उसकी जमानत राशि भरकर उस व्यक्ति को रिहा करवाया। उसने आँखों में आँसू भरकर और रूंधे गले से सबका आभार प्रकट करते हुये कहा, कि 'आप लोगों की वजह से आज मैं अपने परिवार से फिर से मिलूँगा अन्यथा मैंने तो जीने और अपने परिवार से दोबारा मिलने की आस ही छोड़ दी थी।'

इस अवसर पर शीला बहल, पैंसी थॉमस, रीता कपूर, नम्रता मिश्रा, श्वेता अग्निहोत्री, रीता भट्टाचार्या, नीतू सिंह, गौरव गुप्ता, आलोक आर्य, मंगलसिंह आदि उपस्थित थे। सभी महिलाओं ने इस अवसर पर कारागार निरीक्षक (जेलर) श्री पी.डी. सलोनिया का धन्यवाद किया।

—वत्सला प्रभाकर (अध्यक्ष) महिला शांति सेना

समुदाय संगठन पर आधारित ट्रेनिंग प्रोग्राम

आगरा, 3 अगस्त। फातिमा हॉस्पीटल, आगरा द्वारा आगरा की मलिन बस्तियों में चल रहे एच.सी.डी.पी. प्रोग्राम के अन्तर्गत फातिमा हॉस्पीटल में सोशल वर्क प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर जॉली फ्रांसिस द्वारा सी.बी.ओ. की ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया, जिसमें कार्यक्षेत्र में कार्य कर रहे, सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्र से शिक्षित युवक व युवतियों को सी.बी.ओ. ट्रेनिंग प्रोग्राम के बारे में बताया और उन्हें इस ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लेने के लिए कहा। स्त्रोतकर्ता श्रीमती मॉली जोस द्वारा इस ट्रेनिंग प्रोग्राम के माध्यम से लोगों को समाज, समुदाय व सामाजिक संगठन व असंगठन और सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियों दी गईं साथ ही उन्हें कोविड टीकाकरण के बारे में भी जागरुक किया गया। इसमें 32 लोगों ने भाग लिया। **—सिस्टर जॉली फ्रांसिस**

फातिमा अस्पताल, आगरा में ''असल उत्तर'' कोविड-19 परियोजना प्रारम्भ

आगरा, 10 अगस्त। जर्मनी देश की दो संस्थाओं मिसरेओर और जी.एल.आर.ए. सहयोग से कोविड-19 के प्रत्युत्तर में ''असल उत्तर'' नामक परियोजना का शुभारम्भ हो गया। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य कमजोर व निर्धन लोगों के बीच तथा झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों के बीच कोविड-19 के लक्षणों को पहचानकर उनका सामना करने तथा उन्हें

आवश्यक दवा आदि उपलब्ध कराना है। यह परियोजना फातिमा अस्पताल, आगरा के द्वारा कार्य करेगी।

परियोजना शुभारम्भ कार्यक्रम की अध्यक्षता सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के आध्यात्मिक निर्देशक फादर मून लाजरस ने की। इस अवसर पर आगरा महाधर्मप्रांत के स्वास्थ्य आयोग के अध्यक्ष फादर सेबास्टियन कुलीथानम, अस्पताल प्रशासिका सिस्टर अकिला मेरी व समाज सेविका सिस्टर जॉली के अतिरिक्त संस्था के प्रांतीय सामाजिक सलाहकार श्री शिबु जॉर्ज, संस्था के मानव संसाधन मंत्री श्री चार्ल्स लिविंगस्टोन, प्रांतीय अध्यक्ष श्री सचिन गुलाटी एवं आगरा में अर्न्तराज्यीय बस अड्डे पर कार्यरत नई दिशा के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

—सिस्टर अकिला मेरी, आगरा

St. Clare's Feast Day celebrated in St. Clare's School, Agra

11th August is a very special day for the St. Clare's School fraternity, as it is the Feast Day of our Patroness Saint - St. Clare of Assisi.

The Cultural Committee planned the Feast day celebration. In the run-up to the Feast day our school conducted various competitions online for the students - thus enabling them to partake in the celebration even while away from school.

After a short prayer service in St. Patrick's Church, spotlights of the school auditorium were turned on to begin the celebration. People at home could views the programme on the St. Clare's School You Tube channel.

The anchors Mrs. Sangeeta Pandya and Mr. Himanshu Jain started welcomed the entire gathering. The Celebration started with our Principal garlanding the portrait of St. Clare. It was followed by lighting of the lamp.

Rev. Sr. Ujala Mani, shared a verse from the Holy Bible for us to reflect upon, on this great day. It was followed by intercessory prayers for various purpose including the Corona warriors and all the people affected by the pandemic.

A prayer dance by three junior students created a soulful ambiance. It was followed by a well directed and presented depiction of different stages of the life of St. Clare i.e. St. Clare influenced by the preaching of Saint Francis of Assisi, St. Clare refusing to get married as per her parent's wishes and finally St. Clare sacrificing everything for God of the Crib and God of Calvary and the poor, was beautifully staged. It ended with the prayer of St. Clare and Feast Day song. Rev. Fr. Gregory appreciated the fact that in spite of the lockdown, with students at a distance it is so nice to see the student-teacher relationship that has continued.

Rev. Fr. Bhaskar also greatly appreciated the efforts put in by the diorama team that presented the life of St. Clare in such a beautiful manner.

Rev. Father Shajun then announced the result of the Online Essay Competition which was held for the teachers of all schools, of the Agra Archdiocese, in which, Mrs. Veronica Peter of our school received the Third Prize pride for our school.

Mr. Hamanshu Jain then presented the Vote of thanks. With school anthem and the National Anthem the programme came to its hault.

- James Dueman (Teacher)

Solemnity of Assumption and Independence Day Celebrated

Agra, 15 Aug. The solemnity of Blessed Mary's Assumption into heaven was celebrated with great joy in our St. Lawrence Seminary, Agra.

The day began with a solemn thanksgiving holy Mass offered by Rev. Fr. John Ferreira, our Yoga Guru, Rev. Fr. Prakash D'Souza, our Rector concelebrated in the Mass. Rev. Fr. Rector preached a lovely homily highlighting the role of Mother Mary in our salvation history. Rev. Sisters and children from Divya Prabha, Baluganj joined us in the celebration. Rev. Sisters from Fatima Hospital also joined us in our celebration.

After the Mass, we had flag hoisting by our chief guest Rev. Fr. Stephen, Parish Priest. We the students saluted our national flag. Then we had the traditional parade in our basketball court. It was followed by a patriotic dance by Divya Prabha children. Our brothers sang a very touching patriotic song. Then Bro. Suman Toppo gave a firing speech. Later our companions staged a patriotic drama, highlighting the martyrdom of freedom fighters i.e. Sukhdev, Raj Guru and Chandra Shekhar Azad. It was followed by a group dance. Rev. Fr. Moon Lazarus gave us the message and urged us to be responsible citizens. Laddoos were distributed to mark the solemnity.

Later, we went to Prem Daan (M.C. Sisters) to celebrate the Independence Day celebration. Still later six of us, students went to a Dargah Markaz Sabri in Agra Club. There also we had flag hoisting, and presented two patriotic songs.

The festivity came to its end with high tea, grand banquet and watching of a movie, based on the life of some Franciscan monks.

- Bro. Suman Toppo (Beadle), SLS, Agra

प्रेमदान मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी, आगरा में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

आगरा, 15 अगस्त। देश की आजादी की 74वीं वर्षगांठ और धन्य कुँवारी मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण के महापर्व के अवसर पर हमारे प्रेमदान (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी कॉन्वेण्ट, आगरा) के चैपल में प्रातः धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया। श्रद्धेय फादर प्रकाश रॉड्रिग्ज, सहायक पल्ली पुरोहित ने मिस्सा चढ़ाया।

पवित्र मिस्सा के बाद हम सभी सिस्टर्स और बच्चे महिला विभाग में गए। वहाँ सेमीनेरी के योग गुरु फादर जॉन फरेरा ने तिरंगा झण्डा फहराया और देश की आजादी और देशभक्ति के बारे में समझाया। हम बच्चों ने जय हो, देश रंगीला गीतों पर सामूहिक नृत्य किया। बहन मुक्ति एलिज़ाबेथ ने देश भारत और हमारी सोसाइटी के बारे में बताया। समारोह की समाप्ति पर सभी का मिठाई खिलाकर मुँह मीठा कराया गया। जय हो!

—काजल जोसफ बखिता, प्रेमदान, आगरा

स्वतंत्रता दिवस एवं माँ मरियम के स्वर्गारोहण पर्व पर फुटबाल मैच आयोजित

आगरा, 15 अगस्त। देश की आजादी की वर्षगांठ

और माता मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण के महापर्व पर कथीड्रल पल्ली के युवाओं के बीच सेंट पॉल्स इण्टर कॉलेज, आगरा के क्रीड़ांगन पर एक मैत्री फुटबाल मैच खेला गया। दोनों टीमों के नाम टीम इण्डीपेण्डेंस और टीम असम्पशन रखे गए। मैच का शुभारम्भ सेंट पॉल्स इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य फादर जेकब पालामट्टम और सेंट फेलिक्स नर्सरी स्कूल के प्रधानाचार्य फादर डॉमिनिक जॉर्ज द्वारा किया।

इस रोमांचक मैच की समाप्ति पर फादर डॉमिनिक जॉर्ज ने सभी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनसे कलीसिया और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़कर नेतृत्व करने का आह्वान किया। मैच के अन्त में सामूहिक प्रार्थना एवं स्वल्पाहार के साथ हुआ।

-आल्विन सोहनलाल

सद्भावना दिवस पर पौधारोपण सम्पन्न

आगरा, 20 अगस्त। सद्भावना दिवस के अवसर पर इस वर्ष हॉर्टिकल्चर (बागबानी) क्लब, आगरा के पदाधिकारियों द्वारा दिव्य प्रभा (बालूगंज), आगरा के प्रांगण व निकटवर्ती/क्षेत्र में पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर कदम्ब के करीब एक सौ पौधे लगाए गए।

पौधारोपण क्लब की संस्थापिका अध्यक्षा श्रीमती लवली कथूरिया, सह-संस्थापिका श्रीमती डेज़ी गुजराल, तकनीकी विशेषज्ञ डॉ. मुकुल पाण्डया, कोषाध्यक्ष रेनु भगत, योग गुरु फादर जॉन फरेरा, सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के रेक्टर फादर प्रकाश डिसूजा, सहायक रेक्टर फादर लुईस खेस व गुरुकुल के छात्रों ने भी बढ़चढ़कर भाग लिया।

हॉर्टीकल्चर क्लब, आगरा की स्थापना आगरा में 22 सितम्बर 2012 को की गई थी। तब से क्लब ने 2 मियावाकी उद्यानों की स्थापना की है। फरह (मथुरा) स्थित मियावाकी उद्यान में (गौशाला) में क्लब के सदस्यों ने सेमल, अर्जन, कदम्ब, कैथ, कृष्णा सिरिस, मोरिंगा, तमाल और पलाश के पौधे लगाए हैं। इनसे ब्रज क्षेत्र में पर्यावरण स्वच्छ और मनोहारी रहेगा। क्लब के सदस्यों ने विभिन्न स्थानीय मंदिरों के प्रांगण में धार्मिक वृक्ष भी लगाए हैं। क्लब का यह सराहनीय प्रयास रहता है, कि पौधारोपण के कार्यक्रम में विभिन्न निकटवर्ती स्कूल/कॉलेजों के छात्र-छात्राओं के बीच पर्यावरण के प्रति जन जागृति पैदाकर उन्हें भी शामिल किया जाए।

— फादर जॉन फरेरा, आगरा

After COVID-19 Pandemic, He came to His own...

Agra, 23 Aug. To thank the Almighty for His special protection and care of the faithful during second wave of covid 19, special Holy Mass was offered in Akbar's Chuch. A good number of faithful from both mission compounds attended the Mass and received graces manifold.

The Holy Mass was followed by the Eucharist cum Rosary Procession from the Church to the Lower Mission Compound. Rev. Fr. Ignatius Miranda, Parish Priest along with Fr. Viniversal

D'Souza took the lead in organising and supervising the procession. Rev. Fr. Santeesh Antony preached a lovely homily thanking the Lord and Blessed Virgin Mary for their constant protection and care.

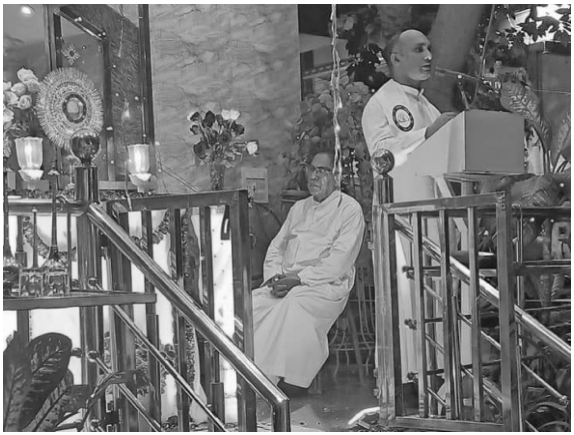

Rev. Fathers and Sisters from the various neighbouring convents faithfully attended the celebration. At the end of the devotion, Mr. Olwin Sohanlal proposed the vote of thanks. The parishioners urgently requested the Parish Priest to visit the mission compound and give them spiritual nourishment regularly.

- Fr. Viniversal D'Souza

NCCI organises One Day Regional Meet on Responsible Citizenship in India

Agra, 27 Aug. National Council of Churches in India (NCCI) organised one day Regional Meeting on Responsible Citizenship in India, on Friday, 27 August in the auditorium of St. Paul's Church College, Civil Lines, Agra.

The meeting was chaired by Rt. Rev. Dr. P.P. Habil, CNI Bishop of Agra Diocese. About fifty persons, including Presbyters, Parish Priests, Principals, Teachers, Lay leaders etc. participated in the meeting.

The meeting began with a welcome note by Fr. Eugene Moon Lazarus, Spiritual Director of St. Lawrence Seminary, Agra. Then Mr. Neil Alexander, Program Executive briefed the house about the meeting. It was followed by a talk on the topic by Rev. Dr. Abraham Mathew, Executive Secretary, Policy and Governance, NCCI. Then Rev. Jyoti Samuel Singh gave a powerful talk on the role, responsibility and present day condition of women in Church and at large in society.

After the tea break, Sri Sanjay Jackson, Advocate Sessions Court, Meerut, threw light on Anti Conversion Acts, crimes related to religion, RTI and FIR. Then it was time to talk about the FORB/local concerns in W.U.P. Fr. E. Moon Lazarus, Dr. Raju Thomas and Fr. Varghese Kunnath shared their views on the topic. It was followed by open forum and comments. Participants actively participated in the discussion and had their queries/doubts clarified.

Sr. Neil Alexander gave a concluding message. His Lordship Bp. P.P. Habil said the final prayer and gave the benediction. The meeting came to its end with a solemn bouquet hosted by St. Paul's Church College, Agra. **- Fr. E. Moon Lazarus**

संत जूड पल्ली, कौलक्खा में संत मोनिका का पर्व मनाया गया

आगरा, 29 अगस्त। संत जूड पल्ली, कौलक्खा में संत मोनिका का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

सर्वप्रथम पल्ली की समस्त महिलाओं ने पंक्तिबद्ध गिरजाघर में प्रवेश किया। गिरजाघर में उनका आरती उतारकर स्वागत किया गया, तत्पश्चात पल्ली पुरोहित फादर राफी व फादर शीजु का भी गिरजाघर में आरती उतार कर स्वागत किया गया। मिस्सा में नए पल्ली पुरोहित फादर राफी ने बताया कि संत मोनिका के तीन बच्चे थे। बड़े पुत्र का नाम अगस्टिन था। शुरु में वे भटक गए थे पर उनकी माता संत मोनिका ने निरंतर 21-22 वर्षों तक उनके परिवर्तन के लिए प्रार्थना की। परिणामस्वरूप संत अगस्टीन ने अपने सारे बुरे काम छोड़ दिए तथा अपना जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया। आगे चलकर वे एक महान संत बने।

संत मोनिका ने न सिर्फ अपने बड़े पुत्र के लिए प्रार्थना की अपितु उन्होंने अपनी दूसरी संतानों व पति के लिए भी प्रार्थना की। आज उनकी प्रार्थना करने की प्रवृत्ति को समस्त मानव जाति को अपनाने की आवश्यकता है। इस संदेश के साथ मिस्सा का अंत हुआ।

—अंजलीना मोसेस

धन्य कुँवारी मरियम के आदर में अपर मिशन कम्पाउण्ड में विशाल भण्डारा आयोजित

आगरा 29 अगस्त। वेलांकनी माता का वार्षिक नोवेना प्राय: 29 अगस्त से प्रारम्भ होता है। उसी दिन वेलांकनी की माता के आदर में पहला झण्डा चढ़ाया जाता है। लोग बड़ी भक्ति भावना से नौ दिवसीय नोवेना प्रार्थना और पवित्र मिस्सा बलिदान में भाग लेते हैं।

इसी श्रृंखला में 29 अगस्त को कथीड्रल महागिरजाघर में माता के आदर में धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। मिस्सा के बाद पवित्र परमप्रसाद को बड़ी भक्तिपूर्वक आदर के साथ एक भव्य जुलूस में ऊपरी मिशन कम्पाउण्ड (पादरी टोला) में लाया गया। इस भव्य समारोह के लिए मिशन कम्पाउण्ड को दुल्हन की तरह सजाया गया था। सर्वप्रथम वहाँ माला विनती पढ़ी गई। उसके बाद माता मरियम को समर्पण की विनती दोहराई गई। नवाभिषिक्त पुरोहित फादर लॉयड लोबो ने पवित्र धर्मग्रंथ से एक पाठ पढ़ा तथा दूसरे नवाभिषिक्त फादर जेमिल्टन ने एक प्रभावशाली प्रवचन दिया। तत्पश्चात परमप्रसाद की आशिष में सभी उपस्थितजनों ने अपने शीष झुकाकर सिजदा किया।

मिशन कम्पाउण्ड वासियों ने माता के आदर में भक्तिपूर्वक गीत-भजन गाए। समारोह के समापन पर नोऐल (ईशान) अथनासियुस ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। तदोपरान्त राजेश विलियम और उनके परिवार की ओर से सभी लोगों के लिए लंगर (भण्डारे) की व्यवस्था की गई थी।

— ज्योति विलियम, आगरा

शिक्षक दिवस पर फादर भास्कर जेसुराज सम्मानित

आगरा, 5 सितम्बर। शिक्षक दिवस के अवसर पर सेंट क्लेयर्स सीनियर सेकण्डरी स्कूल, आगरा छावनी के प्रधानाचार्य श्रद्धेय फादर भास्कर जेसुराज का स्थानीय संकल्प सेवा संस्था (रजि.) द्वारा शुभ लगन मैरिज होम, अर्जुन नगर, आगरा के विशाल प्रेक्षागृह में सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था द्वारा शहर के विभिन्न शिक्षाविदों के साथ-साथ सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्रों से जुड़े महानुभावों को सम्मानित किया गया।

संस्था के अध्यक्ष श्री ब्रजेश पाण्डेय ने इस अवसर पर बताया, कि वैसे तो शहर में तमाम स्कूल-कॉलेज हैं,

लेकिन श्रद्धेय फादर भास्कर जेसुराज का हम इसलिए सम्मान कर रहे हैं कि, उन्होंने कोरोना संक्रमण काल में भी अपने स्कूल के किसी भी छात्र-शिक्षक अथवा कर्मचारी को स्कूल आकर पढ़ने/पढ़ाने या ऑनलाइन पढ़ाने के लिए बाध्य नहीं किया। शिक्षक अपने घर से ही पढ़ाते रहे। जीवन सबके लिए अनमोल है, यह बात उन्होंने व्यवहारिक रूप में हमें समझाई, इसलिए हम सदा उनके आभारी रहेंगे।

संस्था की उपाध्यक्ष श्रीमती सोनी त्रिपाठी एवं संयोजक विकास भारद्वाज ने उन्हें प्रशस्ति पत्र, स्कन्ध पट्ट देकर और फादर मून लाजरस ने एक शॉल ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। सम्मान समारोह में फादर मून लाजरस एवं श्री फिलिप लाल भी उपस्थित थे। **—फिलिप लाल**

कथीड्रल पल्ली में शिक्षक दिवस एवं मदर तेरेसा निर्वाण दिवस पर विशेष कार्यक्रम

आगरा, 5 सितम्बर। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन के जन्म दिवस 'शिक्षक दिवस' एवं मदर तेरेसा के निवार्ण दिवस के अवसर पर निष्कलंक गर्भागमन महागिरजाघर (कथीड्रल चर्च) में विशेष रविवारीय मिस्सा बलिदान का आयोजन किया गया। फादर डॉमिनिक जॉर्ज एवं फादर लॉरेन्स वी. राजा के पवित्र मिस्सा बलिदान अर्पित किया, जिसमें तालीम पढ़ने वाले बच्चों ने अपने शिक्षकों के निर्देशन में पूजन पद्धति एवं गायन का संचालन किया।

पवित्र मिस्सा के पश्चात नजदीकी सेंट फेलिक्स स्कूल में माता मरियम के जन्मदिन की तैयारी स्वरूप कुछ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जैसे बारह वर्ष तक की बालिकाओं का माता मरियम का स्वरूप (भेष) धारण कर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में भाग लेना।

दूसरी प्रतियोगिता में 18 वर्ष और उससे अधिक आयु वाले हैं। युवाओं और विवाहितों के लिए माता मरियम के आदर में भक्ति गीत गाने थे। कार्यक्रम में पल्लीवासियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम का निर्देशन नव-नियुक्त युवा सहायक पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर विनिवर्सल डिसूजा ने किया। अध्यक्षता पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर विनिवर्सल डिसूजा ने किया। अध्यक्षता पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर इग्नेशियुस मिराण्डा ने की। संचालन कु. ब्लूलीफ आल्विन और कु. जेसिका जेम्स ने किया। **- निर्मला जॉन**

शिक्षक दिवस पर सद्भावना की गोष्ठी सम्पन्न

आगरा, 6 सितम्बर। शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस व मदर टेरेसा के निर्वाण दिवस पर कथीड्रल हाउस, आगरा में सद्भावना आगरा द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना सभा व संक्षिप्त गोष्ठी आयोजित करके मनाया गया।

प्रार्थना सभा का प्रारम्भ सद्भावना की अध्यक्षा वत्सला प्रभाकर द्वारा स्वागत सम्बोधन के साथ हुआ। तत्पश्चात सदस्यों ने 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' भजन गाया।

निदेशक फादर वर्गीज कुन्नत द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना व शान्ति की प्रार्थना सम्पन्न कराई। तदोपरान्त डॉ. मुधरिमा शर्मा द्वारा सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जीवन शैली पर प्रकाश डाला। साथ ही वर्तमान समय में कोरोना काल में शिक्षा की जो क्षति हुई है, उस पर प्रकाश डाला।

उपाध्यक्ष डॉ. एस.एस. चौहान ने संत मदर टेरेसा की महानता के बारे में हमें बताया कि किस तरह माँ ने गम्भीर रोगियों की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा दिया। एक ऐसे जीवन का उदाहरण उन्होंने लोगों के सामने रखा कि आज भी मदर टेरेसा का नाम सुनते ही व्यक्ति का सिर स्वत: ही उनके प्रति श्रद्धा से झुक जाता है।

प्रार्थना सभा में श्रद्धेय आर्चबिशप डॉ. राफी मंजलि व निवर्तमान आर्चबिशप डॉ. आल्बर्ट डिसूजा द्वारा क्रमश: विश्व शान्ति व कोरोना से मुक्ति की प्रार्थना की गई।

समिति में यह निर्णय लिया गया कि डेंगू के प्रकोप के समय सद्भावना, आगरा का एक प्रतिनिधि दल नगर आयुक्त आगरा से मिलकर आगरा की दस मलिन बस्तियों में सफाई व फागिंग के लिये आवेदन देगा। जिस समय पर नगर निगम द्वारा फागिंग की जायेगी, सद्भावना के सदस्य वहाँ उपस्थित रहकर कार्य का निरीक्षण करेंगे।

फादर वर्गीज़ कुन्नत ने धन्यवाद दिया। गोष्ठी में डॉ. अजय बाबू, डा. एस.एस. चौहान, समी आगाई, डॉ. नसरीन बेगम आदि उपस्थित थे।

— वत्सला प्रभाकर (अध्यक्ष)

प्रेमदान (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी कान्वेण्ट, आगरा) में टीकाकरण का दूसरा चरण सम्पन्न

आगरा, 7 सितम्बर। मनकामेश्वर मंदिर, रावतपाड़ा, आगरा के प्रमुख महन्त योगेशपुरी और सेंट लॉरेन्स सेमीनेरी के फादर मून लाजरस के सतत प्रयास और जिला अस्पताल, आगरा के अभूतपूर्व सहयोग से प्रेमदान (मिशनरीज़ ऑफ चैरिटी कान्वेण्ट) में वैक्सीन टीकाकरण का दूसरा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में प्रेमदान स्टाफ, बच्चों, महिलाओं और पुरुषों के अलावा सेंट मेरीज़ चर्च के कुछ विश्वासियों सहित लगभग 110 लोगों

को पहली या दूसरी बार वैक्सीन (टीका) लगाया गया। शिविर में दो एम.सी. सिस्टर्स (सिस्टर डोलोरोस और सिस्टर निर्मला रोज़) के साथ होली फैमिली की सिस्टर जेस्सी स्कारिया व 10 आस्पीरेण्ट्स (प्रशिक्षुक छात्राओं), सेमीनेरी छात्रों व फातिमा अस्पताल की नर्सेज़ को भी पहली बार टीका लगाया गया।

शिविर के अंत में सिस्टर वैलेरियन ने जिला अस्पताल से टीका लगाने आई टीम के श्री रमाकान्त प्रजापति, श्री रामवीर सिंह, नर्स मनीषा एवं नर्स बबीता के प्रति आभार प्रकट किया।

—मेघा मैथ्यु, प्रेमदान, आगरा

St. Mary's Church, Agra Annual Feast celebrated

Agra, 8 Sept. "Mother Mary is mother of all of us. She continues to watch over us and pray for us. Her birth brought hope and joy to the whole humanity." Rev. Fr. Sunil Mathew, Finance Administrator of the Archdiocese was addressing the congregation in St. Mary's Church, Agra on the occasion of the solemnity of Nativity of Blessed Virgin Mary, Patroness of the Church. The annual feast of the Church was celebrated with lot of joy and enthusiasm. Frs. Stephen (Parish Priest), Fr. Prakash Rodrigues (Asstt. Parish Priest) along with seminary fathers concelebrated the solemn thanksgiving Mass.

This year due to COVID protocol the attendance of the faithful was rather small. After

the Mass, we had Rosary Procession (Parikarma) around the Church building. The celebration came to its close with the benediction of the Most Blessed Sacrament.

Rev. Fr. Stephen thanked everyone concerned specially, who participated in nine days' Novena and preachers of the annual Tridumm, i.e. Rev. Frs. Prakash D'Souza and E. Moon Lazarus. *Prasad* was distributed to cherish the sweetness of the Lady. The melodious choir was conducted by Mr. Joyson Fernandez and Wales Sisters.

After the celebration we wished each other, and then left for our houses, thanking the Lord for giving us His Mother.

- Meena Pollock, SMC, Agra

कथीड्रल चर्च में माता मरियम का जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

आगरा, 8 सितम्बर। हमारी प्यारी निष्कलंक माता मरियम का महापर्व निष्कलंक गर्भागमन महागिरजाघर में बड़ी धूमधाम के साथ कन्या दिवस के रूप में मनाया गया। उस दिन समारोही पवित्र मिस्सा अति श्रद्धेय महाधर्माध्यक्ष पूजनीय राफी मंजलि ने धन्यवाद के रूप में अर्पित की। मिस्सा में बहुत से पुरोहितों ने भी भाग लिया। पूजा पद्धति का संचालन किशोरी संगठन की बालिकाओं द्वारा किया गया। पहला पाठ कु. दमिता राजेश ने पढ़ा। निवेदन विनतियां किशोरी संगठन की बालिकाओं द्वारा पढ़े गए।

माता मरियम के जन्मोत्सव की आध्यात्मिक तैयारी हेतु श्रद्धेय पल्ली पुरोहित फादर इग्नेशियुस मिराण्डा एवं सहायक फादर विनिवर्सल डिसूजा द्वारा 30 अगस्त से प्रतिदिन शाम की मिस्सा के समय वेलांकनी की माता के आदर में नौ दिवसीय (नोवेना) प्रार्थना की गई, जिसमें पल्लीवासियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

पवित्र मिस्सा बलिदान के बाद सभी लोग अपने हाथों में जलती हुई मोमबत्तियां लेकर माता मरियम के आदर में माला विनती बोलते और गीत भजन गाते हुए पवित्र ग्रोटो तक पहुंचे, जहाँ अंतिम आशीष के साथ जन्मोत्सव का समारोह सम्पन्न हो गया।

हमारे देश में हम माता मरियम के जन्मोत्सव को कन्या दिवस के रूप में मनाते हैं। इस वर्ष शिक्षक दिवस एवं माता मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण के महापर्व पर पल्लीवासियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं, जिनके विजेताओं को जन्मोत्सव के अवसर पर पुरुस्कार देकर स्वामी जी द्वारा प्रोत्साहित किया गया।

कु. पैट्रीशिया, कथीड्रल पैरिश, आगरा

SAVE THE DATES!

1. **Next Clergy Recollection**
   28 Sept. 2021; beginning at 5:30 p.m.
2. **Priests' Annual Retreat**
   I Batch: 10-15 Oct. 2021
   II Batch: 7-12 Nov. 2021
   Preacher: Rev. Fr. Pius Thekkemury S.J.
3. **Priestly Ordination** of Rev. Ajay, Babin & Justin, 31st Oct. 2021

Archdiocese At A Glance

एटा चर्च में फादर राफी की विदाई और फादर अरुल कुमार का स्वागत

एटा, 25 जुलाई। सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर चर्च, एटा में विगत 25 जुलाई को पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर राफी वल्लाचिरा को भावभीनी विदाई दी गई। इस अवसर पर फादर राफी ने धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया।

पवित्र मिस्सा के बाद उनके सम्मान में एक विदाई समारोह आयोजित किया गया। श्री जोस ने कार्यक्रम का संचालन किया। विभिन्न मण्डलों द्वारा उन्हें पुष्प गुच्छ देकर उनके प्रति आभार प्रकट किया गया। श्री जोसफ लाल ने विदाई के अवसर पर सभी पल्लीवासियों की ओर से आभार प्रकट किया। छोटे बच्चों ने गीत गाकर निवर्तमान पल्ली पुरोहित को शुभकामनाएं दीं।

पहली अगस्त को नए पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर अरुल कुमार ने पवित्र मिस्सा के दौरान पल्ली पुरोहित का पद्भार ग्रहण किया। इस अवसर पर अलीगढ़ डीनरी के डीन श्रद्धेय फादर सनी कोट्टूर भी उपस्थित थे। प्रवचन के बाद फादर राफी ने नए पल्ली पुरोहित फादर अरुल कुमार के स्थानान्तरण एवं एटा पल्ली के नए पल्ली पुरोहित के रूप में नियुक्ति-पत्र पढ़कर सुनाया। फादर सनी कोट्टूर ने नए पल्ली पुरोहित को पल्ली पुरोहित के पद के प्रति निष्ठा की शपथ ग्रहण कराई। फादर राफी ने पवित्र सन्दूक (मंजूषा) की कुंजी एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज फादर अरुल को सौंप दिए।

पवित्र मिस्सा बलिदान के पश्चात नए पल्ली पुरोहित के स्वागत में एक छोटा सा स्वागत कार्यक्रम रखा गया। फादर अरुल ने केक काटा। पल्लीवासियों ने फूलों का गुलदस्ता देकर उनका स्वागत किया और शुभकामनाएं दीं। फादर अरुल ने सभी के प्रति अपना आभार प्रकट किया।

8 अगस्त को हम पल्लीवासियों ने निवर्तमान पल्ली पुरोहित फादर राफी को भावभीनी विदाई देते हुए सम्मान सहित उनके नए पते सेंट जूड और सेंट साईमन चर्च, कौलक्खा, आगरा पहुँचा दिया।

— संगीता बैंजामिन, एटा

एटा में स्वतन्त्रता दिवस और माता मरियम का स्वर्गोद्ग्रहण पर्व की धूम

एटा, 15 अगस्त। हमारी सेंट फ्रांसिस ज़ेवियर पल्ली में स्वतंत्रता दिवस की 74वीं वर्षगांठ और धन्य कुँवारी मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण का महापर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: माता मरियम के आदर में माला विनती का जाप किया गया। तत्पश्चात नए पल्ली पुरोहित फादर अरुल कुमार द्वारा पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया।

पवित्र मिस्सा में श्रद्धेय फादर अरुल ने हृदयस्पर्शी उपदेश दिया। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए आजादी की कहानी के बारे में समझाया, कि किस प्रकार हमारे भारत वर्ष को विदेशी सरकार से स्वतंत्रता मिली। इसी की खुशी में हम प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। हम काथलिक विश्वासी उसी दिन धन्य कुँवारी माता मरियम के स्वर्ग में उद्ग्रहण का महापर्व भी मनाते हैं। प्रभु येसु ख्रीस्त के स्वर्ग आरोहण और माता मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण में बहुत अन्तर है। माता मरियम को स्वर्ग जाने के लिए ईश्वरीय शक्ति की जरूरत थी,

क्योंकि वह ईश्वर नहीं है, जबकि प्रभु येसु स्वयं ईश्वर है, उन्हें किसी बाहरी शक्ति की जरूरत नहीं थी। माता मरियम हमारे लिए स्वर्ग से निरन्तर प्रार्थना करती रहती हैं। मिस्सा में पाठ क्रमशः श्रीमती मेरी और श्री साबू ने पढ़े। गायन मण्डली का संचालन सिस्टर किरण, सिस्टर जैस्मिन और सिस्टर कृपा ने किया।

मिस्सा के बाद हमने राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराया और गर्व के साथ राष्ट्रीय गान गाया। समारोह के अंत में सभी को मिठाई खिलाई गई। **-संगीता बैंजामिन, एटा**

दोनों नए पुरोहितों द्वारा टूण्डला पल्ली में पवित्र मिस्सा चढ़ाया गया

टूण्डला, 29 अगस्त। हमारी होली फैमिली पल्ली, टूण्डला में दो नवाभिषिक्त पुरोहितों श्रद्धेय जेमिल्टन और फादर लॉयड लोबो ने प्रथम बार धन्यवाद का पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया। मिस्सा से पहले पल्ली पुरोहित फादर जिप्सन पालाट्टी और सहायक फादर जोसफ पसाला ने बड़ी गर्मजोशी और उल्लास के साथ दोनों का स्वागत किया। फादर लॉयड लोबो ने अपने प्रवचन में युवकों को सही राह पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा, कि 'हम जिस तरह आज सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर रहे हैं, यदि इसमें हम से छोटी सी गलती या भूल हो जाये तो यह हमारे पूरे जीवन पर गलत प्रभाव डाल सकती है।'

फादर ने अपने रीजेन्सी अनुभव हमारे साथ बांटते हुए बताया कि फादर जिप्सन पालाट्टी के निर्देशन में रहकर उन्होंने रीजेन्सी की और बहुत कुछ सीखा। सीखने के दौरान जब उनसे कुछ गलतियां हो जाती थीं तो फादर उन्हें बड़े ही प्यार से समझाते थे।

फादर जोसफ पसाला ने बताया, कि जब भी कोई नवपुरोहित पहली बार किसी चर्च में मिस्सा चढ़ाने आते हैं तो लोग उनकी हथेलियों का चुम्बन करते हैं, लेकिन इस समय कोरोना प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए हमने दोनों नव पुरोहितों से सिर्फ हाथ मिलाया। उपस्थित सभी लोगों ने नवाभिषिक्त पुरोहितों को एक बधाई गीत गाकर मुबारकबाद दी।

हे नव पुरोहितों, हमारे कामना और प्रार्थना है कि आप दोनों अपनी इस पवित्र बुलाहट में हमेशा पवित्र और ईमानदार बने रहें। हम सबकी दुआए आपके साथ हैं, ईश्वर हमेशा आपको स्वस्थ और सुखी रखे।

— कु. मोनिका जॉन, टूण्डला

अलीगढ़ में संत मोनिका दिवस मनाया गया

संत फिदेलिस पल्ली, अलीगढ़ में रविवार 29 अगस्त को संत मोनिका दिवस मनाया गया। पल्ली की सभी महिलाओं और धर्म बहनों ने मोमबत्ती जुलूस के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। प्रस्तावना में संत मोनिका के जीवन पर आधारित परिचय दिया गया। श्रीमती अज्जी टॉम के नेतृत्व में पूजन पद्धति का आयोजन किया गया था, जिसमें सभी महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

फादर सुरेश डिसूजा ने लोगों को उनके परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी तथा पड़ोसी प्रेम के बारे में बताया। मिस्सा के बाद सभी महिलाओं को फादर ने गिफ्ट के

रूप में स्केप्युलर दिये और एक ग्रुप फोटो भी ली गई। तत्पश्चात सभी ने चाय नाश्ते के बाद अपने घरों के लिए खुशी-खुशी प्रस्थान किया। — **निशा बाखला, अलीगढ़**

Teachers' Day Celebration in Holy Family Church, Tundla

"A teacher is a candle who spends the whole life lighting up the lives of students".

Holy Family Church, Tundla on 5th of September decided to honour and pray for the teachers of Holy Family Church who have dedicated their lives for this noble profession in bringing up the future generation of our nation.

The Holy Eucharist began with the introduction of Teachers' Day defining how teachers enlighten and motivate the students to become a responsible citizen and good human being.

Rev. Fr Joseph Pasala offered the Holy Eucharist.During the homily, Fr. Pasala sait that Jesus is the greatest teacher ever lived. And how can we forget on this auspicious day one of the inspiring models St. Teresa of Kolkata, the foundress of Missionaries of Charity whose day of remembrance falls on the 5th of September too. Being a young nun in the Loretto convent, Mother Teresa was trained to be a teacher. She always embraced this position with great love and dedication. She believed that Jesus was the greatest teacher and always communicated his values of Compassion, Love and Commitment to people around her. Besides this Rev. Fr also reminded us how Teacher's Day is celebrated in our nation to commemorate the birthday of Dr. Sarvapalli Radhakrishnan, a great teacher and a staunch believer of education known for his contribution towards the education system of India. Father also emphasized the importance of every teacher in each student's life and the fact that they not only are mere educators, but they are also their guide and philosophers who pave their future.

After the mass, all the teachers were felicitated with a rose and were wished Happy Teachers' Day by their own students in the church.The day ended on a happy note reminding everyone that, being teachers is one of the greatest blessings God has given us; to impart knowledge and to inspire students in every realm of their life. Wishing that our Nation receive talented and responsible citizens through our efforts as Models and Teachers. Wishing every teacher, every mentor, and every guide a Happy Teachers' Day.

- Marykutty George, Tundla

अलीगढ़ में माता मरियम का जन्मोत्सव विश्व कन्या दिवस के रूप में मनाया गया

अलीगढ़, 12 सितम्बर। सेंट फिदेलिस पल्ली, अलीगढ़ में माता मरियम का जन्मदिन विश्व कन्या दिवस के रूप में पारंपरिक हर्ष और उल्लास के वातावरण में मनाया गया। महापर्व की तैयारी नौ दिन पूर्व माता मरियम की नौ दिवसीय प्रार्थना (नोवेना) के साथ शुरु हो गई थी। अंतिम तीन दिनों (त्रिदुम) के साथ पल्लीवासियों ने आत्मिक तैयारी की। प्रतिदिन पवित्र मिस्सा और माला विनती में भाग लिया।

पर्व दिवस पर सभी विश्वासियों ने माता मरियम की सुन्दर रीति से सजी सजाई हुई डोली (झाँकी) के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। जुलूस में पल्ली की बालिकाएं वेदी की ओर दो कतारों में खड़ी रहीं। पवित्र मिस्सा बलिदान श्रद्धेय फादर जॉन रोशन परेरा (पल्ली पुरोहित), फादर सुरेश डिसूज़ा और अतिथि फादर आलोक टोप्पो ने चढ़ाया। धन्य कुँवारी मरियम के जन्म-जीवन के सम्बन्ध में श्रद्धेय फादर आलोक ने सुन्दर प्रवचन दिया। अपने प्रवचन में फादर आलोक ने समाज और कलीसिया में बालिकाओं के महत्व के बारे में समझाया। साथ ही उन्होंने बालिकाओं से अपनी ख्रीस्तीय बुलाहट पहचानने और उसके अनुसार जीवन जीने का आह्वान किया। मिस्सा के पश्चात पल्ली के महिला मण्डल द्वारा बारहवीं कक्षा तक पढ़ने वाली सभी बालिकाओं को उपहार भेंट किए। मिस्सा के बाद माता के जन्मदिन की खुशी में सभी भक्तों को प्रसाद स्वरूप स्वादिष्ट खीर खिलाकर मुँह मीठा कराया गया। माता मरियम हम सबके जीवन में सुख-समृद्धि और शांति लाए। **— अजी टॉम, अलीगढ़**

Celebration of the Feast of Our Lady of Sorrows

Agra, 15 Sept. We the Sisters of PSOL, Agra Community at Baluganj celebrated our Patroness - the Mother of Sorrows' Feast Day. We thanked God for the countless gifts and favours we have received these 82 years since the foundation of our Congregation.

His Grace Most Rev. Raphy Manjaly, our beloved Archbishop celebrated the Holy Eucharist along with Fr. Jemilton in our Convent Chapel. His Grace preached a meaningful homily saying the feast of Our Lady of Sorrows makes us wonder how a lady full of God's grace and who is blessed with the Lord Himself becomes a lady of sorrows! As we deeply ponder upon the life of our Blessed Mother, we will certainly discover that she is more intimately united with the Lord Jesus than any other human person in history. In a unique manner she participates in both; the sorrows and glories of our Lord Jesus Christ. She is our model of perfect Christian discipleship.We are called to imitate the integrity of Mary in heart and mind.

After the Eucharist our children hummed with a feast day song as the Sisters cut the cake. We appetizingly enjoyed our breakfast in the company of His Grace.

The rest of the day was a feeling of celebration and added our joy since our Fathers from St. Lawrence Seminary and St. Mary's Church joined us for lunch. Once again our children entertained us with dances and action songs. Celebration mood continued the rest of the day. In the evening Rev. Frs. from the Archbishop's House and St. Patrick's Church came to wish us happy feast. At the close of the day we thanked the Almighty God for His blessing and graces. We ask Blessed Virgin to pray for us that we may co-suffer in her Son's death and co-share in his His Resurrection. **- Sr. Juliet, PSOL**

Jubilee Celebration marks the hallmark in the history of CFMSS

Delhi, 17 Aug. It will be a red letter day in the anal of CFMSS, Delhi, as on that great day 11 Religious of CFMSS celebrated their Golden Jubilee and 5 Silver Jubilee from St. Francis, Province, Delhi and St. Clare's Province, Dehradun.

The celebration began with the solemn thanksgiving Holy Eucharist offered by Most Rev. Dr. Anil Couto, Archbishop of Delhi, in the Good Shepherd Church, Hauz Khas, New Delhi. Due to COVID-19 protocol a handful priests concelebrated the Holy Mass.

Our sisters from various neighbouring communities were also present, whereas a good number of them from Southern and N. Eastern states couldn't attend the celebration, due to COVID-19 restriction. Rev. Fr. Moon Lazarus from the Archdiocese of Agra represented the whole Archdiocese.

Little dancing girls led the jubilarians, both Provincials and the Archbishop along with concelebrant priests to the alter. Each jubilarian sister was carrying a lighted candle in a glass bowl, which they placed at the alter. Rev. Tresa Francis welcomed everyone on behalf of the Congregation. In his lovely and inspiring homily the Archbishop spoke at length on the vocation to a committed life in a present scenario, with all its challenges and spiritual benefits. Then all jubilarians renewed their vows. Due to various reasons only 5 golden and 4 silver jubilarian could make it to their jubilee. Rev. Sr. Joyce Thadathil, Provincial Superior, St. Francis, Delhi, Rev. Fr. Sebastina Olickal, Provincial Superior, St. Clare Province, Dehradun and Rev. Sr. Deena from Mother Seraphina Province, Guwahati were present to grace the occasion.

After the Mass, some group photos were taken to capture the moment. The church and altar were beautifully decorated by Sr. Chitra and her team, whereas the Liturgy was organized by Srs. Tresa Francis, Selva Rani and Alphonsa. The melodious choir was led by Sr. Sharen with novices and Mr. Sahil.

Later a short felicitation programme was oraganised in the cultural hall of Sahodaya School. Rev. Sr. Matilda read out a felicitation letter from Very Rev. Mother General Karuna Kuruvathanam (Italy). Then all the jubilarian cut the jubilee cake in company of the Archbishop and both Provincials, amids lot of cheering and clapping. Once the cake was cut every one had his share. On behalf of all the jubilarians, Sr. Briget and Sr. Preetika expressed their words of gratitude and love.

Thus, with a delicious banquet the Jubilee celebration came to its close.

Sr. Tresa Francis, CFMSS
St. Anthony's Province
Kalu Sarai, N. Delhi

Archdiocese at a glance...cont.

Ms. Pancy honoured on St. Monica's Day, Gorakhpur

St. Monica's Feast celebrated: Aligarh & Kaulakha Churches

2nd dose of Vaccination, St. Mary's Church

Voter ID Card Camp at SMC, Agra

Patroness Feast: St. Clare's School, Agra

Nativity of B.V.M. celebrated St. Mary's; Agra, St. Fidelis; Aligarh & Cathedral Church; Agra

Sadbhavna Agra Unit, on Teachers' Day

Minor Seminarians busy in planting

Ms. Pancy's team helped a prisoner released

Lest we forget...

H.E. Jacab Mar Barnabas
Succumbed to Covid-19 (26 Aug)

Smt. Sondevi Lily (Jaith)
05.09.2021

St. John's School, Firozabad lost 3 Angels:
Kavya (VII), Archi (X) & Divya (XII) in just 2 days (7-8 Sep)

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Nishi Augustine

With Best Compliments From :

The Manager, Principal, Staff & Students of

St. Antony's School

Dharam Vihar, Khora Colony,
Ghaziabad, Uttar Pradesh 201309

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com